

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

سُورَةُ الْمَائِدَةِ کے سُنْکِھِیپ्ट وِیژَی

یہ سُورَةُ مَدْنَیٰ ہے، اس میں ۱۲۰ آیات ہیں

- اس سُورَتِ مَدْنَیٰ میں شَارِیَۃَت (دِرْمَ وِیدَان) کے پَرِهَوَنے کی بَحْوَشَانَہ کے سَاتِھِ اس کے آدِیَشَوْنَہ تَوْہا نِیَامَوْنَہ کے پَالَنَہ اُور دِھَارِمِیک نِیَامَوْنَہ کو لَاگُو کرَنے پَر بَلِ دِیَا گَیا ہے۔ یہ چُوکِیک دِھَارِمِیک وِیدَان کے پَرِهَوَنے کا سَمَمَی ثَہِ اس لِیَے وَکِیَتِگَات تَوْہا سَامَاجِیک جَیَوَن سے سَبَبَدِیَت دِھَارِمِیک آدِیَشَوْنَہ کو بَتَانے کے سَاتِھِ مُسَلَّمَانَوْنَہ کو اَلْجَاهِ کی پَرِتِیَجَا پَر اَسْتِیَت رَہَنے پَر بَلِ دِیَا گَیا ہے اُور اس سَانِدَرْبَہ میں مُسَلَّمَانَوْنَہ کو سَاوَدَیَان کیَا گَیا ہے کیَ وَہ يَهُودِیَوْنَہ تَوْہا اِسَارِیَوْنَہ کی نِیَتِ ن اپَنَايِنِ جِنْہَوْنَہ نے وَچَن بَمَگ کَر دِیَا اُور دِرْمَ وِیدَان کو نَاشَ کَر دِیَا اُور اس کی سَیِّما سے نِیکَل بَاگَ اُور دِرْمَ میں نَرْدِ-نَرْدِ بَاتَوْنَہ پَئِدا کَر لَیَی۔ چُوکِ کُرْآن کی شَوَلِی مَارْگ دَرْشَن تَوْہا پَرِشَکَشَن کی ہے اس لِیَے اِن سَبَبَی بَاتَوْنَہ کو مِلَا جُولَا کَر وَرْجِیت کیَا گَیا ہے تَاکِیَ مَنَوْنَہ میں دِھَارِمِیک نِیَامَوْنَہ کے پَالَنَہ کی بَاَوَنَا پَئِدا ہُو جَائے۔ اس میں يَهُودِیَوْنَہ تَوْہا اِسَارِیَوْنَہ کو اَنْتِیم سَیِّما تَک جَانِجَوَڈَہ گَیا ہے اُور مُسَلَّمَانَوْنَہ کا مَارْگ عَجَاجَر کیَا گَیا ہے۔
- اس میں پَرِتِیَبَوْنَہ تَوْہا اَلْجَاهِ سے کیَے وَچَن کے پَالَنَہ اُور نَیَّاَی کی نِیَتِ اپَنَاَنَے پَر بَلِ دِیَا گَیا ہے۔
- اس میں دِرْمَ کے وَہ آدِیَشَ بَتَأَیَے گَیے ہے جَو بَیَدِ تَوْہا اَبَیَدِ سے سَبَبَدِیَت ہے۔
- اس میں پَرِلَیَ کے دِنِ نَبِی (سَلَلَ اللَّهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖہ وَسَلَّمَ) کے گَواہِی دَنَے کی بَاتِ کَہَیی گَرْدِ ہے اُور اِسَا (اَلْلَّاہِیْسَلَّمَ) کا عَدَاهَرَن دِیَا گَیا ہے۔
- اس میں يَهُودِیَوْنَہ تَوْہا اِسَارِیَوْنَہ آدِی کو اَرَبَیِ نَبِی پَر اِیْمَان لَانَے کا آمَانْتَرَن دِیَا گَیا ہے۔

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे वह लोगों जो ईमान लाये हो! प्रतिबंधों का पर्ण रूप^[1] से पालन करो, तुम्हारे लिये सब पशु हलाल (वैध) कर दिये गये, परन्तु जिन का आदेश तूम्हें सुनाया जायेगा, सिवाये इस के कि तुम एहराम^[2] की स्थिति में अपने लिये शिकार को हलाल (वैध) न कर लो, वैशक अल्लाह जो आदेश चाहता है, देता है।
2. हे ईमान वालो! अल्लाह की निशानियों^[3] (चिन्हों) का अनादर न करो, और न सम्मानित मासों^[4] का, और न (हज्ज की) कुर्बानी का, न उन में से जिन के गले में पट्टे पड़े हों, और न उन का जो अपने पालनहार की अनुग्रह और उस की प्रसन्नता की खोज में सम्मानित घर (काबा) की ओर जा रहे हों, और जब एहराम खोल दो, तो शिकार कर सकते हो, तथा तुम्हें किसी गिरोह की शत्रुता इस बात पर न उभार दे कि अत्याचार करने लगो, क्यों कि उन्हों ने मस्जिदे-हराम से तुम्हें रोक दिया था, सदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لِيَأْتِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَفَرِيقاً لِيَقُولُوْدُ هُنَّ أَعْلَمُ
لَكُمْ بِهِمْ أَعْلَمُ إِذَا نَعَمْ إِلَيْكُمْ عَلَيْكُمْ غَيْرُ عِلْمٍ
الصَّيْدُ وَأَنْتُمْ حُرْمَانٌ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَرْبِيْدُ^①

لِيَأْتِيَ الَّذِينَ آمَنُوا لَيَحْلُّوْشَعَابِرَاللّٰهُ وَلَا
الشَّهْرُ الْحَرَامُ وَلَا الْهَدَى وَلَا الْقَلَدَى وَلَا أَيْنَ
البَيْتُ الْعَرَامُ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانَ
وَلَا حَالَلَتْمُ فَاصْطَادُوهُ وَلَا يَجِدُونَ مِنْكُمْ شَانَ قَوْمٍ
أَنْ صَدَّوْهُمْ عَنِ السَّجْدَةِ الْعَرَامِ أَنْ تَعْدُوا وَ
وَتَعَاوِنُوا عَلَى الْبَرِّ وَالثَّقْوَى وَلَا تَعَاوِنُوا عَلَى
الْإِلْئَمِ وَالْعُدُوانِ وَأَتْعُوْالَهُ إِنَّ اللّٰهَ
شَدِيدُ الْعِقَابِ^②

1 यह प्रतिबंध धार्मिक आदेशों से संबंधित हों अथवा आपस के हों।

2 अर्थात् जब हज्ज अथवा उमरे का एहराम बाँधे रहो।

3 अल्लाह की बंदना के लिये निर्धारित चिन्हों का।

4 अर्थात् जुलकादा, जुलहिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के मासों में युद्ध न करो।

करो, तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो। और अल्लाह से डरते रहो। निस्सदेह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

3. तुम पर मुर्दार^[1] हराम (अवैध) कर दिया गया है, तथा (बहता हुआ) रक्त और सूअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो, तथा जो श्वास रोध और आघात के कारण, तथा गिर कर और दूसरे के सींग मारने से मरा हो, तथा जिसे हिंसक पशु ने खा लिया हो, परन्तु इन में^[2] से जिसे तुम बध (ज़िब्ह) कर लो, और जिसे थान पर बध किया गया हो, और यह कि पांसे द्वारा अपना भाग्य निकालो, यह सब आदेश उल्लंघन के कार्य हैं। आज काफिर तुम्हारे धर्म से निराश^[3] हो गये हैं। अतः उन से न डरो, मुझी से डरो। आज^[4] मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है। तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा

حُمَّتْ عَلَيْكُمُ الْبِيَتُهُ وَاللَّدُّمْ وَحْمُ الْجَنَّبُرِ وَمَا
أَهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْعِنَقَهُ وَالْمُوْقَدَهُ
وَالْمُنَرَّدَهُ وَالْتَّطِيعَهُ وَمَا أَكَلَ الشَّبَعُ إِلَّا
مَا ذَكَرْتُمْ وَمَا ذَرْتُمْ عَلَى التَّصْبِ وَمَا تَشَيَّمُوا
بِالْأَزْكَارِ مَا لَكُمْ فِي الْيَوْمِ بِئْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا
مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا يَخْشُوْهُمْ وَأَخْسَوْهُنَّ الْيَوْمَ أَكْلَمُ
لَكُمْ وَيُنَاهُ وَأَنْهَمُ عَلَيْكُمْ نَعْمَلُ وَرَفِيْعُ
الْإِسْلَامَ وَيُنَاهِمُ اضْطُرَّرَ فِي فَخْصَصَةٍ غَيْرَ
مُهَاجِنِي لِإِثْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ حِلْيُونَ^[5]

1. मुर्दार से अभिप्राय वह पशु है, जिसे धर्म के नियमानुसार बध (ज़िब्ह) न किया गया हो।

2. अर्थात् जीवित मिल जाये और उसे नियमानुसार बध (ज़िब्ह) कर दो।

3. अर्थात् इस से कि तुम फिर से मूर्तियों के पुजारी हो जाओगे।

4. सूरह बकरह आयत नं० 28 में कहा गया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह प्रार्थना की थी कि "इन में से एक आज्ञाकारी समुदाय बना दे।" फिर आयत 150 में अल्लाह ने कहा कि "अल्लाह चाहता है कि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे।" और यहाँ कहा कि आज अपना पुरस्कार पूरा कर दिया। यह आयत हज्जतुल बदाअ में अरफ़ा के दिन अरफ़ात में उतरी। (सहीह बुखारी-4606) जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अंतिम हज्ज था, जिस के लगभग तीन महीने बाद आप संसार से चले गये।

कर दिया, और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया। फिर जो भूक से आतुर हो जाये जब कि उस का झुकाव पाप के लिये न हो, (प्राण रक्षा के लिये खा ले) तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

4. वे आप से प्रश्न करते हैं कि उन के लिये क्या हलाल (वैध) किया गया? आप कह दें कि सभी स्वच्छ पवित्र चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दी गयी हैं। और उन शिकारी जानवरों का शिकार जिन को तुम ने उस ज्ञान द्वारा जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, उस में से कुछ सिखा कर सधाया हो। तो जो, (शिकार) वह तुम पर रोक दें उस में से खाओ, और उस पर अल्लाह का नाम^[1] लो। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
5. आज सब स्वच्छ खाद्य तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दिये गये हैं। और ईमान वाली सतवंती स्त्रियाँ, तथा उन में से सतवंती स्त्रियाँ जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं। जब कि उन को उन का महर (विवाह

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أَعْلَمُ لَهُمْ قُلْ أَعْلَمُ لِكُلِّ الظَّبَابٍ وَمَا
عَلِمْتُمُوهُنَّ مُجْوَرُهُنَّ تَعْلَمُونَهُنَّ مِنَ أَعْلَمِكُلِّ
اللَّهُ فَكُلُّهُ أَعْلَمُ مَمَّا أَمْسَكَ عَلَيْهِمْ وَإِذَا كُلُّوا اسْتَوْلُوا
عَلَيْهِ وَانْقُضُوا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ①

الْيَوْمَ أَعْلَمُ لِكُلِّ الظَّبَابٍ وَطَعَامُ الَّذِينَ أَوْتُوا
الْكِبَرَ حُلُّ لَهُمْ وَطَعَامُكُلِّ الْأَنْوَافِ وَالْمُحْصَنُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُحْصَنُونَ مِنَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِبَرَ
مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا أَتَيْتُهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصَنِينَ غَيْرُ
مُسْفِيِّينَ وَلَا مُشْجِنِي أَخْدَانَ وَمَنْ يَكْفُرُ

1. अर्थात् सधाये हुये कुत्ते और बाज़-शिकारे आदि का शिकार, उस के शिकार के उचित होने के लिये निम्नलिखित दो बातें आवश्यक हैं:

1. उसे बिस्मल्लाह कह कर छोड़ा गया हो। इसी प्रकार शिकार जीवित हो तो बिस्मल्लाह कर के वध किया जाये।
2. उस ने शिकार में से कुछ खाया न हो। (बुखारी: 5478, मु. 1930)

उपहार) चुका दिया हो, विवाह में लाने के लिये, व्याभिचार के लिये नहीं, और न प्रेमिका बनाने के लिये। और जो ईमान को नकार देगा, उस का सत्कर्म व्यर्थ हो जायेगा, तथा परलोक में वह विनाशों में होगा।

6. हे ईमान वालो! जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो (पहले) अपने मुँह तथा हाथों को कुहनियों तक धो लो, और अपने सिरों का मसह^[1] कर लो, तथा अपने पावों टखनों तक (धो लो) और यदि जनाबत^[2] की स्थिति में हो तो (स्नान कर के) पवित्र हो जाओ। तथा यदि रोगी अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आये, अथवा तुम ने स्त्रियों को स्पर्श किया हो और तुम जल न पाओ तो शुद्ध धूल से तयम्मुम कर लो, और उस से अपने मुखों तथा हाथों का मसह^[3] कर लो। अल्लाह तुम्हारे लिये कोई संकीर्णता (तंगी) नहीं चाहता। परन्तु तुम्हें पवित्र करना चाहता है, और ताकि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।
7. तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार

بِالْأَيْمَانِ فَقَدْ حِيطَ عَيْلَةً وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنْ
الْخَيْرِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا أَفْتَمْتُ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيهِكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسُحُوا بُرُوفِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۖ قَلْبُ
كُلِّنَّمُ جُنْبَاهُ ۖ فَإِذَا ظَهَرُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَى
أَوْ عَلَى سَقِيرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَلَبِطِ
أَوْ لِمَسْطُورِ النَّسَاءِ قَلْمَنْ تَجَدُّدُ وَأَمَاءُ فَتَعَمِّمُوا
صَعِيدَادًا طَيْبًا فَامْسُحُوا بُرُوفِكُمْ وَأَيْدِيهِكُمْ
مِّنْهُ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ
وَلَكُنْ يُرِيدُ لِيُظْهِرَ كُلُّمَا لِمُتَّقِّنِ عُمَدةً
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَإِذْكُرُوا نَعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِنْ شَاقِهِ الَّذِي

1 मसह का अर्थ है, दोनों हाथ भिगो कर सिर पर फेरना।

2 जनाबत से अभिप्राय वह मलिनता है जो स्वप्न दोष तथा स्त्री संभोग से होती है। यही आदेश मासिक धर्म तथा प्रसव का भी है।

3 हदीस में है कि एक यात्रा में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का हार खो गया, जिस के लिये बैदा के स्थान पर रुकना पड़ा। भोर की नमाज़ के बुजू के लिये पानी नहीं मिल सका और यह आयत उत्तरी। (देखिये: सहीह बुखारी- 4607) मसह का अर्थ हाथ फेरना है। तयम्मुम के लिये देखिये सूरह निसा, आयत 43।।

और उस दृढ़ वचन को याद करो जो तुम से लिया है। जब तुम ने कहा: हम ने सुन लिया और आज्ञाकारी हो गये। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह दिलों के भेदों को भली भाँति जानने वाला है।

8. हे ईमान वालो! अल्लाह के लिये खड़े रहने वाले, न्याय के साथ साक्ष्य देने वाले रहो, तथा किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस पर न उभार दे कि न्याय न करो। वह (अर्थात्: सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप^[1] है। निःसंदेह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से भली भाँति सूचित है।
9. जो लोग ईमान लाये, तथा सत्कर्म किये तो उन से अल्लाह का वचन है कि उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।
10. तथा जो काफिर रहे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहा, तो वही लोग नारकी हैं।
11. हे ईमान वालो! उस समय को याद करो जब एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाना^[2] चाहा, तो अल्लाह ने

وَالْقَاتِلُونَ لَا ذُلْمَ لِمَنْ سَعَى وَأَطْعَنَهُ
وَأَنْجُوا اللَّهُ أَنَّ اللَّهَ عَلِمُ الْيَدَيْنَ اِنَّ الصُّدُورَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُنُوكُ قَوْمِنَ يَلْكُ
شَهَدَ أَنَّهُ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجُرِّمُكُمْ شَنَانُ
قُوْمٌ عَلَى أَكْثَرِهِنَّ لَوْا إِعْدَلُوا هُوَ أَقْرَبُ
إِلَى التَّقْوَىٰ وَأَنْجُوا اللَّهُ أَنَّ اللَّهَ حَبِّبَ إِلَيْهَا
تَعْمَلُونَ

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصِّلَاحَتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ
أَصْحَبُ الْعَذَابِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا وَانْعِمْتَ اللَّهُ
عَلَيْكُمْ لَا ذُلْمَ لِهِمْ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ

1 हदीस में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो न्याय करते हैं वह अल्लाह के पास नूर (प्रकाश) के मंच पर उस के दायें और रहेंगे, - और उस के दोनों हाथ दायें हैं- जो अपने आदेश तथा अपने परिजनों और जो उन के अधिकार में हो, में न्याय करते हैं। (सहीह मुस्लिम - 1827)

2 अर्थात् तुम पर आक्रमण करने का निश्चय किया तो अल्लाह ने उन के आक्रमण से तुम्हारी रक्खा की। इस आयत से सम्बन्धित बुखारी में सहीह हदीस आती है कि

उन के हाथों को तुम से रोक दिया,
तथा अल्लाह से डरते रहो, और
ईमान वालों को अल्लाह ही पर निर्भर
करना चाहिये ।

12. तथा अल्लाह ने बनी इस्राईल से
(भी) दृढ़ वचन लिया था, और उन
में बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये थे,
तथा अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे
साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ की स्थापना
करते, और ज़कात देते रहे, तथा मेरे
रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते,
और उन को समर्थन देते रहे, तथा
अल्लाह को उत्तम कृण देते रहे, तो
मैं अवश्य तुम को तुम्हारे पाप क्षमा
कर दूँगा, और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में
प्रवेश दूँगा जिन में नहरें प्रवाहित
होंगी। और तुम में से जो इस के
पश्चात् भी कुफ़ (अविश्वास) करेगा
वह सुपथ^[1] से विचलित हो गया।

13. तो उन के अपना वचन भंग करने के
कारण, हम ने उन को धिक्कार दिया,
और उन के दिलों को कड़ा कर
दिया, वह अल्लाह की बातों को उन

एक युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एकान्त में एक पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे कि एक व्यक्ति आया और आप की तलवार खींच कर कहा तुम को अब मुझ से कौन बचायेगा? आप ने कहा: अल्लाह। यह सुनते ही तलवार उस के हाथ से गिर गई। और आप ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुखारी- 4139)

1. अल्लाह को कृण देने का अर्थ उस के लिये दान करना है। इस आयत में ईमान वालों को सावधान किया गया है कि तुम अहले किताबः यहूद और नसारा जैसे न हो जाना जो अल्लाह के वचन को भंग कर के उस की धिक्कार के अधिकारी बन गये। (इब्ने कसीर)

أَيُّدِيْهُمْ فَكَفَأَيُّدِيْهُمْ عَنْكُمْ وَأَنْقُوْا
إِلَهٌ وَعَلَى إِلَهٍ قَلِيلٌ تَوَكِّلُ الْمُؤْمِنُونَ

وَلَقَدْ أَخْذَ اللَّهُ مِنْكُمْ مِنْ كُلِّ إِسْرَاءَءِيلَ
وَبَعَثْنَا مِنْهُمْ أُشْرِقَيْبَالَ وَقَالَ اللَّهُ
إِنِّي مَعَكُمْ لَكُمْ أَقْمَمُ الصَّلَاةَ وَأَتَيْمُ
الرِّزْكَوْةَ وَأَمْنَلُكُمْ بِرُسُلِيْ وَغَيْرَ تَحْوِهْ
وَأَفْرَضْنَا لَهُ قُرْصَاحَنَا لَا كُفَّارَانَ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَلَا دُخْلَلَكُمْ جَنَّتٍ بَغْرِيْبٍ مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ
مِنْكُمْ فَقَدْ فَلَلَ سَوَاءَ السَّيِّئُونَ

فِيمَا نَقْضَيْهُمْ مِنْ كُلِّهِمْ لَعْنُهُمْ وَجَعَلْنَا
فُلُوْبَهُمْ قَبِيْهَ يُحَرِّفُونَ الْحُكَلَمَ عَنْ
مَوَاضِعِهِ وَسُوا حَاطِمَنَا ذَكِرْ دَوَابِهِ

के वास्तविक स्थानों से फेर देते^[1] हैं, तथा जिस बात का उन को निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, और (अब) आप बराबर उन के किसी न किसी विश्वासघात से सूचित होते रहेंगे, परन्तु उन में बहुत थोड़े के सिवा जो ऐसा नहीं करते, अतः आप उन्हें क्षमा कर दें, और उन को जाने दें, निस्संदेह अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

14. तथा जिन्होंने कहा कि हम नसारा (ईसाई) हैं, हम ने उन से (भी) दृढ़ वचन लिया था, तो उन्हें जिस बात का निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, तो प्रलय के दिन तक के लिये हम ने उन के बीच शत्रुता तथा पारस्परिक (आपसी) विद्वेष भड़का दिया, और शीघ्र ही अल्लाह जो कुछ वह करते रहे हैं, उन्हें^[2] बता देगा।

1 सही हदीس में आया है कि कुछ यहूदी, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक नर और नारी को लाये जिन्होंने व्यभिचार किया था, आप ने कहा: तुम तौरात में क्या पाते हो? उन्होंने कहा: उन का अपमान करें और कोड़े मारो। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: तुम झुठे हो। बल्कि उस में (रज्म) करने का आदेश है। तौरात लाओ। वह तौरात लाये तो एक ने रज्म की आयत पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे पढ़ दिया। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: हाथ उठाओ। उस ने हाथ उठाया तो उस में रज्म की आयत थी। (सहीह बुखारी - 3559, सहीह मुस्लिम - 1699)

2 आयत का अर्थ यह है कि जब ईसाइयों ने वचन भंग कर दिया तो उन में कई परस्पर विरोधी सम्प्रदाय हो गये, जैसे याकूबिय्य: नसतूरिय: आरयसिय: और सभी एक दूसरे के शत्रु हो गये। तथा इस समय आर्थिक और राजनीतिक सम्प्रदायों में विभाजित हो कर आपस में रक्तपात कर रहे हैं। इस में भी मुसलमानों को सावधान किया गया है कि कुर्�আن के अर्थों में परिवर्तन कर के ईसाइयों के समान सम्प्रदायों में विभाजित न होना।

وَلَا إِنَّا نَنْهَا عَنِ الْحُكْمِ وَإِنَّهُ لَا
قَدِيلٌ لِمَنْ هُمْ قَاعُفُ عَنْهُمْ
وَاصْفَحُهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٢﴾

وَمِنَ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ أَنَّهُمْ أَخْذُنَا
مِنْ ثَأْرِهِمْ فَنُسُوا حَطَّافَهُمْ ذِكْرُوا بِهِ
فَأَغْرَيْنَا بِأَنَّهُمْ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ
إِلَى يَوْمِ الْقِيمَةِ وَسُوقَ يُبَيِّنُهُمْ
اللَّهُ بِهَا كَلُوبًا يَصْنَعُونَ ﴿٣﴾

15. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं^[1], जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहे हैं, जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं, अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (कुर्अन) आ गई है।
16. जिस के द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का मार्ग दिखा रहा है, जो उस की प्रसन्नता पर चलते हों, उन्हें अपनी अनुमति से अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है, और उन्हें सुपथ दिखाता है।
17. निश्चय वह कफिर^[2] हो गये, जिन्होंने कहा कि मर्यम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि अल्लाह मर्यम के पुत्र और उस की माता तथा जो भी धरती में है, सब का विनाश कर देना चाहे, तो किसी में शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा आकाशों और धरती और जो भी इन के बीच है, सब अल्लाह ही का राज्य है, वह जो चाहे उत्पन्न करता है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।
18. तथा यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें

يَا أَهْلَ الْكِتَابَ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ نَّبِيٌّ مِّنْ أَنفُسِكُمْ يَأْتِيُكُمْ مِّنْ بَيْنِ أَرْجُونَ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا لَمْ تُخْفُنَ مِنْ أَنْتُمْ وَيَعْقُوْلُ عَنْكُمْ كَثِيرٌ مِّنْ حَاجَةٍ إِلَيْكُمْ مِّنْ أَنْتُمْ وَكُلُّكُمْ مُّبِينٌ^[3]

يَهُدِيُّ بِإِيمَانِهِ مَنْ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبْلَ السَّلِيمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلْمِ إِلَى النُّورِ يَادُنِهِ وَيَهُدِيُّهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْمُسْتَقِيمِ^[4]

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يُمْلِكُ مِنْ اللَّهِ شَيْئًا إِنَّ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَآمَّةَهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لَوْلَا مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ^[5]

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى مَنْ أَنْتُُ اللَّهُ وَأَجَّلَّ أَنْتَ قُلْ فَلَمْ يُعْذِّبْكُمْ بِذُنُوبِكُمْ إِنَّمَا

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लाम। तथा प्रकाश से अभिप्राय कुर्अन पाक है।

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम के अल्लाह होने की मिथ्या आस्था का खण्डन किया जा रहा है।

तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वैसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा आकाशों और धरती तथा जो उन दोनों के बीच है, अल्लाह ही का राज्य (अधिपत्य)^[1] है, और उसी की ओर सब को जाना है।

19. हे अहले किताब! तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात् हमारे रसूल आ गये^[2] हैं, वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया, तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

20. तथा याद करो, जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो कि उस ने तुम में नबी और शासक बनाये, तथा तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार वासियों में किसी को नहीं दिया।

1 इस आयत में ईसाइयों तथा यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया जा रहा है कि वह अल्लाह के प्रियवर हैं, इस लिये जो भी करें, उन के लिये मुक्ति ही मुक्ति है।

2 अंतिम नबी मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लم, ईसा अलैहिस्सलाम के छः सौ वर्ष पश्चात् 610-ई० में नबी हुये। आप के और ईसा अलैहिस्सलाम के बीच कोई नबी नहीं आया।

بَشَرٌ مِّنْ خَلْقِنَا يَعْفُرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ^①

يَا أَهْلَ الْكِتَابَ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَىٰ فِتْنَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا حَاجَتُمْ إِلَيْهِ وَلَا كَذِبُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ بِشَيْرٍ وَنَذِيرٍ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ^②

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقُولُمَا ذُكْرُوا نَعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِي كُلِّ أُنْسِيَاءٍ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا وَإِنَّكُمْ مَا لَمْ يُؤْتِ إِحْدًا مِّنَ الْعَلَيِّينَ^③

21. हे मेरी जाति! उस पवित्र धरती (बैतुल मक्कदिस) में प्रवेश कर जाओ, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे न फिरो, अन्यथा असफल हो जाओगे।
22. उन्हों ने कहा: हे मूसा! उस में बड़े बलवान लोग हैं, और हम उस में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक वह उस से निकल न जायें, तभी हम उस में प्रवेश कर सकते हैं।
23. उन में से दो व्यक्तियों ने जो (अल्लाह से) डरते थे, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया, कहा कि: उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ, तुम जब उस में प्रवेश कर जाओगे, तो निश्चय तुम प्रभुत्वशाली होगो। तथा अल्लाह ही पर भरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो।
24. वह बोले: हे मूसा! हम उस में कदापि प्रवेश न करेंगे, जब तक वह उस में (उपस्थित) रहेंगे, अतः तुम और तुम्हारा पालनहार जाये, फिर तुम दोनों युद्ध करो, हम यहीं बैठे रहेंगे।
25. (यह दशा देख कर) मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर कोई अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमारे तथा अवैज्ञाकारी जाति के बीच निर्णय कर दो।
26. अल्लाह ने कहा: वह (धरती) उन पर चालीस वर्ष के लिये हराम (वर्जित)

يَقُولُ أَدْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ
اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُو وَاعْلَمْ أَدْبَارَكُمْ فَنَنْقَلِبُو
خَرْبِينَ ⑤

قَالَ أَوَيْسَى إِنِّي رَأَيْتُ فِيهَا قَوْمًا جَبَلِيْنَ إِنَّا لَنْ
نَدْخُلُهَا حَتَّى يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا
فَإِنَّا ذَرْخُونَ ⑥

قَالَ رَجُلٌ مِّنَ الظَّبَابِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ
عَلَيْهِمَا أَدْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ قَذَادَ خَلْصَتُهُ
فَأَلَّكُمْ غَلُوبُونَ هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنَّ
كُلَّمُؤْمِنٍ ⑦

قَالَ أَوَيْسَى إِنَّا لَنْ نَدْخُلُهَا أَبْدَانَادُمُوا فِيهَا
قَذَاهُبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ قَاتِلًا لَا تَأْهُلُنَا
قَعْدُونَ ⑧

قَالَ رَتِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخْيَ
قَافُرْقَ بَيْتَنَا وَبَيْنَ النَّوْمِ الْفَيْقِينَ ⑨

قَالَ فَإِنَّهَا حَزَمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً

कर दी गई। वह धरती में फिरते रहेंगे, अतः तुम अवैज्ञाकारी जाति पर तरस न खाओ॥^[1]

27. तथा उन को आदम के दो पुत्रों का सहीह समाचार^[2] सुना दो, जब दोनों ने एक उपायन (कुर्बानी) प्रस्तुत की, तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से स्वीकार नहीं की गई। उस (दूसरे) ने कहा: मैं अवश्य तेरी हत्या कर दूँगा। उस (प्रथम)ने कहा: अल्लाह आज्ञाकारियों ही से स्वीकार करता है।
28. यदि तुम मेरी हत्या करने के लिये मेरी ओर हाथ बढ़ाओग^[3], तो भी मैं तुम्हारी ओर तुम्हारी हत्या करने के लिये हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं विश्व के पालनहार अल्लाह से डरता हूँ।
29. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी (हत्या के) पाप और अपने पाप के साथ फिरो, तो नारकी हो जाओगे, और यही अत्याचारियों का प्रतिकार (बदला) है।

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल को ले कर मिस्र से निकले, तो अल्लाह ने उन्हें बैतुल मक्कदिस में प्रवेश कर जाने का आदेश दिया, जिस पर अमालिका जाति का अधिकार था। और वही उस के शासक थे, परन्तु बनी इसराईल ने जो कायर हो गये थे, अमालिका से युद्ध करने का साहस नहीं किया। और इस आदेश का विरोध किया, जिस के परिणाम स्वरूप उसी क्षेत्र में 40 वर्ष तक फिरते रहे। और जब 40 वर्ष बीत गये, और एक नया वंश जो साहसी था पैदा हो गया तो उस ने उस धरती पर अधिकार कर लिया। (इब्ने कसीर)

2 भाष्यकारों ने इन दोनों के नाम काबील और हाबील बताये हैं।

3 नबी (سَلَّلَ اللّٰهُ عَلٰيْهِ وَسَلَّمَ) ने कहा: जो भी प्राणी अत्याचार से मारा जाये तो आदम के प्रथम पुत्र पर उन के खून का भाग होता है क्यों कि उसी ने प्रथम हत्या की रीति बनाई है। (सहीह बुखारी: 6867, मुस्लिम: 1677)

يَتَّقِنُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفَسِيقِينَ ①

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا أَبْنَى أَدْمَرٌ بِالْحَقِّ إِذْ فَرَّ بِهِ
فُورِيًّا فَمُقْتَلٌ مِنْ أَهْلِهِمَا وَلَمْ يَتَّقْبَلْ مِنْ
الْآخِرَةِ قَالَ لَأَقْتُلْكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَّقْبَلُ اللَّهُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ②

لَهُنْ بَسْطَكَ إِلَى يَدِكَ لَتَقْتُلُنِي مَا كُنْتَ أَبْسِطُ
يَدِي إِلَيْكَ لَأَقْتُلَكَ إِلَيْكَ أَخْافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَلَمِينَ ③

إِنَّ أُرْبِيدُ أَنْ تَبُوأْ يَانِثِي وَإِشْكَ فَتَّالُونَ
مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزْءُ الظَّلَمِينَ ④

30. अंततः उस ने स्वयं को अपने भाई की हत्या पर तय्यार कर लिया, और विनाशों में हो गया।
31. फिर अल्लाह ने एक कौआ भेजा, जो भूमि कुरेद रहा था, ताकि उसे दिखाये कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाये, उस ने कहा: मुझ पर खेद है! क्या मैं इस कौआ जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छुपा सकूँ, फिर बड़ा लज्जित हुआ।
32. इसी कारण हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया^[1] कि जिस ने भी किसी प्राणी की हत्या की किसी प्राणी का खून करने अथवा धरती में विद्रोह के बिना तो समझो उस ने पुरे मनुष्यों की हत्या^[2] कर दी। और जिस ने जीवित रखा एक प्राणी को तो वास्तव में उस ने जीवित रखा सभी मनुष्यों को। तथा उन के पास हमारे रसूल खुली निशानियाँ लाये, फिर भी उन में से अधिकांश धरती में विद्रोह करने वाले हैं।
33. जो लोग^[3] अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध करते हों, तथा धरती में उपद्रव करते फिर रहे हों, उन का दण्ड यह है कि उन की हत्या

فَطَوَعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتَلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ
الْمُنْجَرِينَ ⑤

فَبَعَثَ اللَّهُ عُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيكَهُ
كَيْفَ يُوَارِي سَوْدَةَ أَخِيهِ قَالَ يُوَيْلَتِي
أَعْجَزْتُ أَنْ أَلْوَنَ وَشَلَ هَذَا الْعُرَابُ فَأَوْارَى
سَوْدَةَ أَخِيَّ فَأَصْبَحَ مِنَ الظَّرِيمِينَ ⑥

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَنَّهُمْ مَنْ قَاتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادَ فِي
الْأَرْضِ فَكَانُوا قَاتِلِ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ
أَحْيَاهَا فَكَانَهَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ
جَاءَنَا شُهُرُ رُسُلُنَا بِالْبُيُونِ تُخَرَّجُ كَثِيرًا مِنْهُ
بَعْدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُشْرِفُونَ ⑦

إِنَّمَا جَزَرُ الَّذِينَ يُعَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَيَسْعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقْتَلُوا أَوْ
يُصَلَّبُوا أَوْ تُنْقَطَمَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ وَنَحْنُ

1 अर्थात् नियम बना दिया, इस्लाम में भी यही नियम और आदेश है।

2 क्यों कि सभी प्राण, प्राण होने में बराबर हैं।

3 इस आयत में देश द्रोहियों तथा तस्करों को दण्ड देने का नियम तथा आदेश बताया जा रहा है। तथा अल्लाह और उस के रसूल के आदेशों के उल्लंघन को उन के विरुद्ध युद्ध कहा गया है। (अधिक विवरण के लिये देखिये: सहीह बुखारी, हदीस- 4610)

की जाये, तथा उन्हें फाँसी दी जाये, अथवा उन के हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिये जायें, अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। यह उन के लिये संसार में अपमान है, तथा परलोक में उन के लिये इस से बड़ा दण्ड है।

34. परन्तु जो तौबा (क्षमा याचना) कर लें, इस से पहले कि तुम उन्हें अपने नियंत्रण में लाओ, तो तुम जान लो कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
35. हे ईमान वालो! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, और उस की ओर वसीला^[1] खोजो, तथा उस की राह में जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।
36. जो लोग काफिर हैं, यद्यपि धरती के सभी (धन धान्य) उन के अधिकार (स्वामित्व) में आ जायें और उसी के समान और भी हो, ताकि वे, यह सब प्रलय के दिन की यातना से अर्थ दण्ड स्वरूप देकर मुक्त हो जायें, तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जायेगा, और उन्हें दुखदायी यातना होगी।
37. वह चाहेंगे कि नरक से निकल जायें, जब कि वह उस से निकल नहीं

1 (वसीला) का अर्थ है: अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और उस की अवैज्ञा से बचने तथा ऐसे कर्मों के करने का जिन से वह प्रसन्न हो। वसीला हदीस में स्वर्ग के उस सर्वांच्च स्थान को भी कहा गया है जो स्वर्ग में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि و सल्लम) को मिलेगा जिस का नाम ((मकामे महमूद)) है। इसी लिये आप ने कहा: जो अज्ञान के पश्चात् मेरे लिये वसीला की दुआ करेगा वह मेरी सिफारिश के योग्य होगा। (बुखारी- 4719) पीरों और फ़कीरों आदि की समाधियों को वसीला समझना निमूल और शिर्क है।

جَلَّٰنِ أَوْ يُسْقُو مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ
خَرْبٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَعْذِيرُهُمْ
عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

لَيَأْتِهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا
إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِهِ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَّا أَنَّ لَهُمْ مَنَافِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَقْتَدِرُوا إِنَّهُمْ
عَذَابٌ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا نَقْبَلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ

يُرِيدُونَ أَنْ يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ

सकेंगे, और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

38. चोर, पुरुष और स्त्री दोनों के हाथ काट दो, उन के करतूत के बदले, जो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड है^[1] और अल्लाह प्रभावशाली गुणी है।

39. फिर जो अपने अत्याचार (चोरी) के पश्चात् तौबः (क्षमा याचना) कर ले, और अपने को सुधार ले, तो अल्लाह उस की तौबः स्वीकार कर लेगा^[2], निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يُخْرِجُنَّ مِنْهَا وَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ

وَالسَّارِقُ وَالشَّارِقَةُ قَاطِعُو أَيْدِيهِمْ حَاجَزَ أَيْمَانَهَا
كَسْبًا كَمَا لَمْ يَأْتِ اللَّهُ بِأَنْهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ
يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ

1. यहाँ पर चोरी के विषय में इस्लाम का धर्म विधान वर्णित किया जा रहा है कि यदि चौथाई दीनार अथवा उस के मूल्य के सामान की चोरी की जाये, तो चोर का सीधा हाथ कलाई से काट दी। इस के लिये स्थान तथा समय के और भी प्रतिबंध हैं। शिक्षाप्रद दण्ड होने का अर्थ यह है कि दूसरे इस से शिक्षा ग्रहण करें, ताकि पूरा देश और समाज चोरी के अपराध से स्वच्छ और पवित्र हो जाये। तथा यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस घोर दण्ड के कारण, इस्लाम के चौदह सौ वर्षों में जिन्हें यह दण्ड दिया गया है, वह बहुत कम हैं। क्योंकि यह सज़ा ही ऐसी है कि जहाँ भी इस को लागू किया जायेगा वहाँ चोर और डाकू बहुत कुछ सौच समझ कर ही आगे कदम बढ़ायेंगे। जिस के फलस्वरूप पूरा समाज अम्न और चेन का गहवारा बन जायेगा। इस के विपरीत संसार के आधुनिक विधानों ने अपराधियों को सुधारने तथा उन्हें सभ्य बनाने का जो नियम बनाया है, उस ने अपराधियों में अपराध का साहस बढ़ा दिया है। अतः यह मानना पड़ेगा कि इस्लाम का यह दण्ड चोरी जैसे अपराध को रोकने में अब तक सब से अधिक सफल सिद्ध हुआ है। और यह दण्ड मानवता के मान और उस के अधिकार के विपरीत नहीं है। क्योंकि जिस व्यक्ति ने अपना माल अपने खून पसीना, परिश्रम तथा अपने हाथों की शक्ति से कमाया है तो यदि कोई चोर आ कर उस को उचकना चाहे तो उस की सज़ा यही होनी चाहिये कि उस का वह हाथ ही काट दिया जाये जिस से वह अन्य का माल हड्डप करना चाह रहा है।

2. अर्थात् उसे परलोक में दण्ड नहीं देगा, परन्तु न्यायालय चोरी सिद्ध होने पर उसे चोरी का दण्ड देगा। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

40. क्या तुम जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे, और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
41. हे नबी! वह आप को उदासीन न करें, जो कुफ्र में तीव्रगामी है, उन में से जिन्होंने कहा कि हम ईमान लाये, जब कि उन के दिल ईमान नहीं लाये और उन में से जो यहूदी है, जिन की दशा यह है कि मिथ्या बातें सुनने के लिये कान लगाये रहते हैं, तथा दूसरों के लिये जो आप के पास नहीं आये कान लगाये रहते हैं, वह शब्दों को उन के निश्चित स्थानों के पश्चात् वास्तविक अर्थों से फेर देते हैं। वह कहते हैं कि यदि तुम को यही आदेश दिया जाये (जो हम ने बताया है) तो मान लो, और यदि वह न दिये जाओ, तो उस से बचो। (हे नबी!) जिसे अल्लाह अपनी परीक्षा में डालना चाहे, आप उसे अल्लाह से बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। यही वह है जिन के दिलों को अल्लाह ने पवित्र करना नहीं चाहा। उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये परलोक में घोर^[1] यातना है।

اللَّهُ تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ^①

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَجُزُّنَكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ
فِي الْكُفَّارِ مِنَ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ أَمْ إِلَيْكُمْ أَفْوَاهِهِمْ
وَلَهُمْ نُورٌ مِّنْ قُلُوبِهِمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوكُمْ
سَمَعُونَ لِمَكْنَبِ سَمَعُونَ لِقَوْمٍ أَخْرَيْنَ
أَحْمَرُ يَأْتُوكُمْ بِيُحَرِّفُونَ الْكَلَمَ مِنْ بَعْدِ
مَوَاضِيعِهِ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخَدُودٌ
وَإِنْ لَكُمْ تُؤْتُونَهُ فَلَا حَدْرُونَ وَمَنْ يُرِيدُ اللَّهُ
فِتْنَتَهُ فَلَكُنْ شَمِيلَكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
أُولَئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ بِاللَّهِ أَنْ يُطْهَرُ
قُلُوبُهُمْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خَرْجٌ وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَدَابٌ عَظِيمٌ^②

1) मदीना के यहूदी विद्वान, मुनाफिकों (द्विधावादियों) को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजते कि आप की बातें सुनें। और उन को सूचित करें। तथा अपने विवाद आपके पास ले जायें। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई निर्णय करें तो हमारे आदेशानुसार हो तो स्वीकार करें अन्यथा स्वीकार न करें। जब कि तौरात की आयतों में इन के आदेश थे, फिर भी वे उन में परिवर्तन कर के उन का अर्थ कुछ का कुछ बना देते थे। (देखिये व्याख्या आयत- 13)

42. वह मिथ्या बातें सुनने वाले अवैध भक्षी हैं। अतः यदि वह आप के पास आये, तो आप उन के बीच निर्णय कर दें, अथवा उन से मुँह फेर लें (आप को अधिकार है)। और यदि आप उन से मुँह फेर लें, तो वे आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि निर्णय करें, तो न्याय के साथ निर्णय करें। निस्सदेह अल्लाह न्यायकारियों से प्रेम करता है।

43. और वह आप को निर्णयकारी कैसे बना सकते हैं, जब कि उन के पास तौरात (पुस्तक) मौजूद है, जिस में अल्लाह का आदेश है। फिर इस के पश्चात् उस से मुँह फेर रहे हैं। वास्तव में वह ईमान वाले हैं ही^[1] नहीं।

44. निस्सदेह हम ने ही तौरात उतारी जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, जिस के अनुसार वह नबी निर्णय करते रहे जो आज्ञाकारी थे,^[2] उन के लिये जो यहूदी थे। तथा धर्माचारी और विद्वान लोग। क्योंकि वह अल्लाह की पुस्तक के रक्षक बनाये गये थे, और उस के (सत्य होने के) साक्षी थे। अतः तुम (भी) लोगों से न डरो, मझी से डरो, और मेरी आयतों के बदले तनिक मल्य न ख़रीदो, और जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक

سَمَعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْلُونَ لِلسُّحْنِ فَإِنْ جَاءُوكُمْ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ اغْرِضُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ تُعْرِضُ عَنْهُمْ فَلَنْ يُفْرُطُ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ حَكِيمٌ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ^①

وَكَيْفَ يُعِلِّمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرِيدُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ تَحْتَهُنَّ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرِيدَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا الشَّيْعَيْنَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا إِلَيْنَا هَادِئًا وَالرَّتِينَيْنَ وَالْأَجْبَارِ بِهَا اسْتُخْفِقُوا مِنْ كِتْبِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شَهِدَاءَ فَلَا يُنَزَّلُوا إِلَيْهِمْ وَلَا يُنَزَّلُوا شَهِيدًا بِالْيَمِينِ تَهْمَنًا قَلِيلًا وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِهَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكُفَّارُ ^②

1 क्यों कि वह न तो आप को नबी मानते, और न आप का निर्णय मानते, तथा न तौरात का आदेश मानते हैं।

2 इस्लाम में भी यही नियम है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाँत तोड़ने पर यही निर्णय दिया था। (सहीह बुखारी: 4611)

के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही काफिर हैं।

45. और हम ने उन (यहूदियों) पर उस (तौरात) में लिख दिया कि प्राण के बदले प्राण है, तथा आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, तथा कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, तथा सभी आधारों में बराबरी का बदला है। फिर जो कोई बदला लेने को दान (क्षमा) कर दे, तो वह उस के लिये (उस के पापों का) प्रायशिचत हो जायेगा, तथा जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही अत्याचारी हैं।

46. फिर हम ने उन (नवियों) के पश्चात् मर्यम के पुत्र ईसा को भेजा, उसे सच बताने वाला जो उस के सामने तौरात थी। तथा उसे इंजील प्रदान की, जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। उसे सच बताने वाली जो उस के आगे तौरात थी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये सर्वथा मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।

47. और इंजील के अनुयायी भी उसी से निर्णय करें, जो अल्लाह ने उस में उतारा है, और जो उस से निर्णय न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो वही अधर्मी हैं।

48. और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (कुर्�आन)

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ يَالنَّفْسِ
وَالْعَيْنَ يَالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ يَالْأَنْفِ وَالْأَذْنَ
يَالْأَذْنِ وَالسَّمَاءُ يَالسَّمَاءِ وَالْجَرْحُ حَقَاصٌ
فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَارَةً لَهُ وَمَنْ
لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ⑤

وَقَفَّيْنَا عَلَى إِثْرِهِمْ بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمْ مُصَدِّقًا
لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرِيقِ وَاتَّبَعْنَا الْأَعْيُنَ
فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
الثَّوْرِيقِ وَهُدًى وَمُوعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ⑥

وَلَيَحْكُمْ أَهْلُ الْأَيْمَنَ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ وَمَنْ
لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَسِيْقُونَ ⑦

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ

उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक^[1] है, अतः आप लोगों का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, तथा उन की मन मानी पर उस सत्य से विमुख हो कर न चलें, जो आप के पास आया है। हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया^[2] था, और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता, परन्तु उस ने जो कुछ दिया है, उस में तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अतः भलाईयों में एक दूसरे से अग्रसर होने का प्रयास करो^[3], अल्लाह ही की ओर तुम सब को लोट कर जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जिन बातों में तुम विभेद करते रहे।

يَدْعُو مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَمِّنَا عَلَيْهِ فَأَحْكَمَ بِيَنْهُمْ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ قُومٍ عَنْهَا جَاءُوكُمْ
مِنَ الْجَنِّ لِكُلِّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ شُرُعَةٌ وَمِنْهَا جَاءُ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أَنَّهُ وَاحِدًا وَلَكُمْ لِيَنْهَا كُوكُبُ
فِي مَا أَنْشَأَكُمْ فَالْيَقِنُ بِإِلَهِكُمْ رَجُلُكُمْ
كُلُّمَا فَيَنْتَهُ كُوكُبٌ بِمَا كَنْتُمْ فِيهِ تَعَذَّلُونَ ۝

1 संरक्षक होने का अर्थ यह है कि कुर्�আn अपने पूर्व की धर्म पुस्तकों का केवल पुष्टिकर ही नहीं, कसोटि (परख) भी है। अतः आदि पुस्तकों में जो भी बात कुर्�আn के विरुद्ध होगी वह सत्य नहीं परिवर्तित होगी, सत्य वही होगी जो अल्लाह की अन्तिम किताब कुर्�আn पाक के अनुकूल हो।

2 यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब तौरात तथा इंजील और कुर्�আn सब एक ही सत्य लाये हैं, तो फिर इन के धर्म विधानों तथा कार्य प्रणाली में अन्तर क्यों है? कुर्�আn उस का उत्तर देता है कि एक चीज़ मूल धर्म है, अर्थात् एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म का नियम, और दूसरी चीज़ धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली है, जिस के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाये, तो मूल धर्म तो एक ही है, परन्तु समय और स्थितियों के अनुसार कार्य प्रणाली में अन्तर होता रहा है, क्यों कि प्रत्येक युग की स्थितियाँ एक समान नहीं थीं, और यह मूल धर्म का अन्तर नहीं, कार्य प्रणाली का अन्तर हुआ। अतः अब समय तथा स्थितियाँ बदल जाने के पश्चात् कुर्�আn जो धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली प्रस्तुत कर रहा है वही सत्धर्म है।

3 अर्थात् कुर्�আn के आदेशों का पालन करने में।

49. तथा (हे नबी!) आप उन का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की मन मानी पर न चलें तथा उन से सावधान रहें कि आप को जो अल्लाह ने आप की ओर उतारा है, उस में से कुछ से फेर न दें। फिर यदि वह मुँह फेरें, तो जान लें कि अल्लाह चाहता है कि उन के कुछ पापों के कारण उन्हें दण्ड दें। वास्तव में बहुत से लोग उल्लंघनकारी हैं।

50. तो क्या वह जाहिलिय्यत (अंधकार युग) का निर्णय चाहते हैं? और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है, उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

51. हे ईमान वालो! तुम यहूदी तथा ईसाईयों को अपना मित्र न बनाओ, वह एक दूसरे के मित्र है, और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

52. फिर (हे नबी!) आप देखेंगे कि जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है, वह उन्हीं में दौड़े जा रहे हैं, वह कहते हैं कि हम डरते हैं कि हम किसी आपदा के कुचक्र में न आ जायें, तो दूर नहीं कि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उस के पास से कोई बात हो जायेगी, तो वह लोग उस बात पर जो उन्होंने अपने मनों में छुपा रखी है, लज्जित होंगे।

53. तथा (उस समय) ईमान वाले कहेंगे।

وَإِنْ أَحْكَمْ بِيْهُمْ بِآنْزِلِ اللَّهِ وَلَا تَتَبَعَّ
أَهْوَاءَهُمْ وَاحْدَدْ رُهْمَهُمْ أَنْ يَقْرِئُوا عَنْ بَعْضِ مَا
آنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ فَإِنْ تَوَكُّلُوا فَأَعْلَمُ أَمَانَ لِرِبِّكُمْ
أَنْ تُصْبِحُهُمْ بَعْضُ ذُلْوَبِهِمْ وَلَكَثِيرُ أَنْ
النَّاسُ لَفِيْقُونَ ⑥

أَخْلَمُ الْجَاهِلِيَّةَ يَسْعَوْنَ وَمَنْ أَحْسَنْ مِنَ اللَّهِ
حَكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقَنُونَ ⑦

لِيَأْيَهَا الَّذِينَ آمَنُوا وَلَا تَتَنَعَّجُنَّ وَالْيَهُودَ
وَالنَّصَارَى أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلَيَاءُ بَعْضٍ وَمَنْ
يَتَوَلَّهُمْ فَمِنْكُمْ قَاتِلٌ مِّنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهُدِي
الْقَوْمَ الظَّلِيمِينَ ⑧

فَهَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يُسَارِعُونَ
فِيهِمْ يَقُولُونَ نَحْنُ خَيْرٌ أَنْ يُصْبِنَادَابِرُهُمْ
فَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْلَمَ يَا الْفَطَحَ أَمْ مِنْ عِنْدِهِ
فَيَصْبِحُوا عَلَى نَاسٍ رُّوْا فِي الْفَسَادِ هُنْ دُمِّينَ ⑨

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا هُؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ

क्या यही वह है, जो अल्लाह की बड़ी गंभीर शपथें ले कर कहा करते थे कि वह तुम्हारे साथ है? इन के कर्म अकारथ गये और अंततः वह असफल हो गये।

54. हे ईमान वालो! तुम में से जो अपने धर्म से फिर जायेगा, तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा, जिन से वह प्रेम करेगा, और वह उस से प्रेम करेंगे। वह ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफिरों के लिये कड़े^[1] होंगे। अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की दया है, जिसे चाहे प्रदान करता है, और अल्लाह (की दया) विशाल है और वह अति ज्ञानी है।
55. तुम्हारे सहायक केवल अल्लाह और उस के रसूल तथा वह है, जो ईमान लाये, जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं, और अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं।
56. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा, तो निश्चय अल्लाह का दल ही छा कर रहेगा।
57. हे ईमान वालो! उन को जिन्होंने ने तुम्हारे धर्म को उपहास तथा खेल

جَهْدًا لِمَا نَهَرُ إِنَّهُمْ لَمَعْلُومُ حِيطَتْ أَعْمَالَهُمْ
فَأَصْبَحُوا خَيْرِيْنَ ④

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدِدْ مِنْهُ عَنْ دِيْنِهِ
فَسَوْفَ يَأْتِيَ اللَّهُ بِقُوَّمٍ مُّجْتَمِعُهُمْ وَمُجْتَمِعُهُنَّ أَذْلَقُهُ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعْرَقُهُمْ عَلَى الْكُفَّارِ إِنَّ رَجُلَاهُمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَغْلِبُونَ لَوْمَةً لَا يَبُوْذُ ذَلِكَ
فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتَيْهُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِمْ ⑤

إِنَّمَا يُلْكِلُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا
يُقْرِئُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الرِّزْكَوْةَ وَهُمْ
رَكِعُونَ ⑥

وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَأَنَّ
جَزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَلَبُونَ ⑦

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَعَّمُوا
وَالَّذِينَ اخْنَدُوا

¹ कड़े होने का अर्थ यह है कि वह युद्ध तथा अपने धर्म की रक्षा के समय उन के दबाव में नहीं आयेंगे, न जिहाद की निन्दा उन्हें अपने धर्म की रक्षा से रोक सकेगी।

बना रखा है उन में से जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं, तथा काफिरों को सहायक (मित्र) न बनाओ, और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

58. और जब तुम नमाज़ के लिये पुकारते हो, तो वे उस का उपहास करते तथा खेल बनाते हैं, इस लिये कि वह समझ नहीं रखते।
59. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! इस के सिवा हमारा दोष क्या है, जिस का तुम बदला लेना चाहते हो, कि हम अल्लाह पर तथा जो हमारी ओर उतारा गया और जो हम से पूर्व उतारा गया उस पर ईमान लाये हैं, और इस लिये कि तुम में अधिकृतर उल्लंघनकारी हैं?
60. आप उन से कह दें कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ, जिन का प्रतिफल (बदला) अल्लाह के पास इस से भी बुरा है? वह हैं जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ, तथा उन में से बंदर और सूअर बना दिये गये, तथा तागूत (असुर- धर्म विरोधी शक्तियों) को पूजने लगो। इन्हीं का स्थान सब से बुरा है, तथा सर्वाधि कुपथ है।
61. जब वह^[1] तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, जब

دِيْنُكُمْ هُرْزُوا وَلَعِبَّا قَوْنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارُ أَولَمْ يَأْمَأْ وَأَنْقُوا اللَّهُ
إِنْ كُنُّتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑩

وَإِذَا نَادَيْتُمُهُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اخْتَدُوهَا هَرْزُوا
وَلَعِبَّا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ⑪

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابَ هَلْ تَتَقَبَّلُونَ مِثْلًا إِنَّ أَمْنَا
بِإِلَهٍ وَمَا أَنْزَلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزَلَ مِنْ قَبْلِ
وَأَنَّ الْكُفَّارَ كُفَّارٌ فِيْقُونَ ⑫

قُلْ هَلْ أَيْسِنَكُمْ بِئْرٌ مِنْ ذَلِكَ مَثُوبَةٌ عِنْدَ اللَّهِ
مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَعَصَبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ
الْقَرَدَةَ وَالْخَنَازِيرُ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ أُولَئِكَ
شُرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ الشِّيْءِ ⑬

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا أَمْنَا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكُفَّارِ

1 इस में द्विविधावादियों का दूराचार बताया गया है।

कि वह कुफ़्र लिये हुये आये और
उसी के साथ वापिस हुये, तथा
अल्लाह उसे भली भाँति जानता है,
जिस को वह छुपा रहे हैं।

62. तथा आप उन में से बहुतों को देखेंगे
कि पाप तथा अत्याचार और अपने
अवैध खाने में दौड़ रहे हैं, वह बड़ा
कुकर्म कर रहे हैं।
63. उन को उन के धर्माचारी तथा
विद्वान पाप की बात करने तथा
अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? वह
बहुत बुरी रीति बना रहे हैं।
64. तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के
हाथ बँधे^[1] हुये हैं, उन्हीं के हाथ बँधे
हुये हैं। और वह अपने इस कथन के
कारण धिक्कार दिये गये हैं, बल्कि
उस के दोनों हाथ ख़ुले हुये हैं, वह
जैसे चाहे व्यय (ख़च) करता है, और
इन में से अधिकतर को जो (कुर्�आन)
आप के पालनहार की ओर से आप
पर उतारा गया है, उम्मन्घन तथा
कुफ़्ر (अविश्वास) में अधिक कर
देगा, और हम ने उन के बीच प्रलय
के दिन तक के लिये शत्रुता तथा बैर
डाल दिया है। जब कभी वह युद्ध की
अग्नि सुलगाते हैं, तो अल्लाह उसे
बुझा^[2] देता है। वह धरती में उपद्रव

وَهُمْ قَدْ حَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا
يَكْتُمُونَ

وَرَبِّكَ تَشِيرُ إِلَيْهِمْ يُسَارِعُونَ فِي الْأَنْجُونَ
وَالْعَدُوَانَ وَآكُلُهُمُ السُّحْنَ لَيْسَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ

لَوْلَا يَنْهَمُ الرَّبِّيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ
قَوْلِهِمُ الْإِثْمُ وَآكُلُهُمُ السُّحْنَ لَيْسَ مَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ قَلْتُ أَيْدِيهِمْ
وَلَعْنُوا بِهَا قَالُوا أَبْلَى يَدُهُ مَبْسُوطَةٌ لَيُنْفَقُ كَيْفَ
يَشَاءُ وَلَيَرِيدُنَّ تَغْرِيَةً مِنْهُمْ مَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ
رِّيَّكَ طَعْيَانًا وَلَغْرَأْ وَالْقِيَّانِ لِنَمَّةِ الْعَدَاوَةِ
وَالْبَعْضَاءِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كُلُّمَا أَوْقَدُوا نَارًا
لِلْحَرْبِ أَطْفَلَهَا اللَّهُ وَيَسْعَونَ فِي الْأَرْضِ
فَسَادُوا وَلَهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ

1 अरबी मुहावरे में हाथ बँधे का अर्थ है कंजूस होना, और दान-दक्षिणा से हाथ रोकना। (देखिये: सूरह आले इमरान, आयत- 181)

2 अर्थात उन के पड़यंत्र को सफल नहीं होने देता बल्कि उस का कुफल उन्हीं को भोगना पड़ता है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में विभिन्न दशाओं में हुआ।

का प्रयास करते हैं, और अल्लाह
विद्रोहियों से प्रेम नहीं करता।

65. और यदि अहले किताब ईमान लाते,
तथा अल्लाह से डरते, तो हम अवश्य
उन के दोषों को क्षमा कर देते, और
उन्हें सुख के स्वर्गों में प्रवेश देते।

66. तथा यदि वह स्थापित^[1] रखते तौरात
और इंजील को, और जो भी उन
की ओर उतारा गया है, उन के
पालनहार की ओर से, तो अवश्य
उन को अपने ऊपर (आकाश)
से, तथा पैरों के नीचे (धरती) से^[2]
जीविका मिलती, उन में एक संतुलित
समुदाय भी है। और उन में से बहुत
से कुर्कर्म कर रहे हैं।

67. हे रसूل!^[3] जो कुछ आप पर आप
के पालनहार की ओर से उतारा
गया है उसे (सब को) पहुँचा दें,
और यदि ऐसा नहीं किया, तो आप
ने उस का उपदेश नहीं पहुँचाया।
और अल्लाह (विरोधियों से) आप
की रक्षा करेगा^[4], निश्चय अल्लाह,

وَلَوْاَنَّ أَهْلَ الْكِتَابَ أَمْنُوا وَأَتَقْوَى الْكَفَرَ نَا عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخُلَنَّهُمْ جَنَّتِ النَّعِيْمِ^①

وَلَوْاَنَّهُمْ أَقَامُوا الْعُوْرَةَ وَالْإِعْيَمَ وَمَا أُنْزِلَ
إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَا كُوْنُ اِنْ فَوْقُهُمْ وَمِنْ حَتَّى
أَرْجُلُهُمْ وَمِنْهُمْ أَمَّةٌ مَقْصِدَهُ دُكْثُرٌ مِنْهُمْ
سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ^٢

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغُ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ
فَلَنْ أَحْمَدْ نَفْعَلُ قَمَابَلْغَتْ رِسَالَتُهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ
مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَذَاهِبٌ إِلَيْهِمُ الْقَوْمُ الْكُفَّارُينَ^٣

1 अर्थात् उन के आदेशों का पालन करते और उसे अपना जीवन विधान बनाते।

2 अर्थात् आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज में अधिकता होती।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

4 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने के पश्चात् आप पर विरोधियों
ने कई बार प्राण घातक आक्रमण का प्रयास किया। जब आप ने मक्का में
सफ़ा पर्वत से एकेश्वरवाद का उपदेश दिया तो आप के चचा अबू लहब ने
आप पर पत्थर चलाये। फिर उसी युग में आप काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे
थे कि अबू जहूल ने आप की गरदन रौदने का प्रयास किया, किन्तु आप के
रक्षक फ़रिश्तों को देख कर भागा। और जब कुरैश ने यह योजना बनाई कि

काफिरों को मार्गदर्शन नहीं देता।

68. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहल किताब! तुम किसी धर्म पर नहीं हो, जब तक तौरात तथा इंजील और उस (कुर्झान) की स्थापना^[1] न करो, जो तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, तथा उन में से अधिकतर को जो (कुर्झान) आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है, अवश्य उल्लंघन तथा कुफ्र (अविश्वास) में अधिक

فَلَنْ يَأْفَلَ الْكُفَّارُ لَكُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ هُنَّ عَتَّّقُمُوا
الْتَّوْرِيهَ وَالْإِنجِيلُ وَمَا أُنزَلَ إِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَلَيَزِدُنَّ كُثُرًا مِّنْهُمْ نَّا أُنزَلَ إِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
طَفِيَّانًا وَكُفَّارًا فَلَا تَأْتِسَ عَلَىٰ قَوْمٍ الظَّفَّارِينَ^[١]

आप को बध कर दिया जाये और प्रत्येक कबीले का एक युवक आप के द्वार पर तलवार लेकर खड़ा रहे और आप निकलें तो सब एक साथ प्रहार कर दें, तब भी आप उन के बीच से निकल गये। और किसी ने देखा भी नहीं। फिर आप ने अपने साथी अबू बक्र के साथ हिज्रत के समय सौर पर्वत की गुफा में शरण ली। और काफिर गुफा के मुंह तक आप की खोज में आ पहुँचे। उन्हें आप के साथी ने देखा, किन्तु वे आप को नहीं देख सके। और जब वहाँ से मदीना चले तो सुराक़ा नामी एक व्यक्ति ने कुरैश के पुरस्कार के लोभ में आ कर आप का पीछा किया। किन्तु उस के घोड़े के अगले पैर भूमि में धंस गये। उस ने आप को गुहारा, आप ने दुआ कर दी, और उस का घोड़ा निकल गया। उस ने ऐसा प्रयास तीन बार किया फिर भी असफल रहा। आप ने उस को क्षमा कर दिया। और यह देख कर वह मुसलमान हो गया। आप ने फरमाया कि एक दिन तुम अपने हाथ में ईरान के राजा के कंगन पहनोगे। और उमर बिन ख़त्ताब के युग में यह बात सच साबित हुई। मदीने में भी यहूदियों के कबीले बनू नज़ीर ने छत के ऊपर से आप पर भारी पत्थर गिराने का प्रयास किया जिस से अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। खैबर की एक यहूदी स्त्री ने आप को विष मिला के बकरी का माँस खिलाया। परन्तु आप पर उस का कोई बड़ा प्रभाव नहीं हुआ। जब कि आप का एक साथी उसे खा कर मर गया। एक युद्ध यात्रा में आप अकेले एक वृक्ष के नीचे सो गये, एक व्यक्ति आया, और आप की तलवार ले कर कहा: मुझ से आप को कौन बचायेगा? आप ने कहा: अल्लाह। यह सुन कर वह काँपने लगा, और उस के हाथ से तलवार गिर गई और आप ने उसे क्षमा कर दिया। इन सब घटनाओं से यह सिद्ध हो जाता है कि अल्लाह ने आप की रक्षा करने का जो वचन आप को दिया, उस को पूरा कर दिया।

¹ अर्थात् उन के आदेशों का पालन न करो।

कर देगा, अतः आप काफिरों (के अविश्वास) पर दुखी न हों।

69. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और साबी, तथा ईसाई, जो भी अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, तथा सत्कर्म करेगा, तो उन्हीं के लिये कोई डर नहीं, और न वह उदासीन^[1] होंगे।
70. हम ने बनी इस्माईल से दृढ़ वचन लिया, तथा उन के पास बहुत से रसूल भेजे, (परन्तु) जब कभी कोई रसूल उन की अपनी आकांक्षाओं के विरुद्ध कुछ लाया, तो एक गिरोह को उन्होंने ज़ुठला दिया, तथा एक गिरोह को बध करते रहे।
71. तथा वह समझे कि कोई परीक्षा न होगी, इस लिये अंधे बहरे हो गये, फिर अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया, फिर भी उन में से अधिकतर अंधे और बहरे हो गये, तथा वह जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।
72. निश्चय वह काफिर हो गये, जिन्हों

إِنَّ الَّذِينَ أَمْسَأْوُا إِلَيْنَا مَنْ هَادُوا وَالظَّاهِرُونَ
وَالنَّصْرَى مِنْ أَمْنَ يَأْتِي لَهُمْ وَالْيَوْمُ الْآخِرُ وَعَلَى
صَالِحِينَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ⑤

لَقَدْ أَخَذْنَا مِنْكُمْ شَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَأَنْسَلْنَا إِلَيْهِمْ
رُسُلًا كُلُّهُمْ جَاءُهُمْ مُّهَمْسُوْلُّوْنَ إِمَّا لَأَنَّهُمْ أَنفُسُهُمْ
فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفِرِيقًا لَّمْ يَقْتُلُوْنَ ⑥

وَحِسْبُهُمُ الْأَكْلُونَ فِيْنَهُ فَعَمُوا وَصَمُوا ثُمَّ تَابَ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُوا إِنَّهُمْ مُّنْهَمُونَ
بَصِيرُهُمْ مَا يَعْمَلُونَ ⑦

لَقَدْ كَفَرُ الْأَنْجِنَ قَاتِلُوا رَبَّنَ اللَّهَ هُوَ الْمُسِيحُ ابْنُ مُّمَّا

1 आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम से पहले यहूदी, ईसाई तथा साबी जिन्होंने अपने धर्म को पकड़ रखा है, और उस में किसी प्रकार का हेर-फेर नहीं किया, अल्लाह तथा आखिरत पर ईमान रखा और सदाचार किये उन को कोई भय और चिन्ता नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार की आयत सूरह बकरह (62) में भी आई है जिस के विषय में आता है कि कुछ लोगों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया कि उन लोगों का क्या होगा जो अपने धर्म पर स्थित थे और मर गये? इसी पर यह आयत उतरी। परन्तु अब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के लाये धर्म पर ईमान लाना अनिवार्य है इस के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।

ने कहा कि अल्लाह,^[1] मर्यम का पुत्र मसीह ही है। जब कि मसीह ने कहा था: हे बनी इसराईल! उस अल्लाह की इबादत (वंदना) करो जो मेरा पालनहार तथा तूम्हारा पालनहार है, वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया। और उस का निवास स्थान नरक है। तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

73. निश्चय वह भी काफिर हो गये, जिन्हों ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है, जब कि कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही अकेला पूज्य है, और यदि वह जो कुछ कहते हैं, उस से नहीं रुके, तो उन में से काफिरों को दुखदायी यातना होगी।
74. वह अल्लाह से तौबः तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है?
75. मर्यम का पुत्र मसीह इस के सिवा कुछ नहीं कि वह एक रसूल है, उस से पहले भी बहुत से रसूल हो चुके हैं, उस की माँ सच्ची थी, दोनों भोजन करते थे, आप देखें कि हम कैसे उन के लिये निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर

وَقَالَ الْمَسِيحُ يَدْعُ إِسْرَائِيلَ أَعْبُدُ وَاللَّهَ رَبِّي
وَرَبِّكُمْ إِنَّمَا مَنْ يُتَبَرَّكُ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ
الْجَنَّةَ وَمَا أُولَئِكُمْ بِالظَّالِمِينَ مَنْ لَنْصَارِفَ

لَقَدْ كَفَرُوا لِيَوْمَ قَالُوا لَنَّا نَلْكِلُ ثَلَاثَةَ سَوْمَادِينْ
إِلَوَاتِ الْأَلَاهُ وَاحْدَهُ وَلَنْ نَحْبِسْهُمْ أَعْلَمُ قُولُونْ
لَيَمْسَئُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

أَفَلَا يَتَبَوَّءُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَتَعَفَّرُونَ هَذَا وَاللَّهُ عَزُّوْرٌ
رَّحِيمٌ

مَا الْمُسِيْحُ بْنُ مُحَمَّدٍ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَقَ مِنْ قَبْلِهِ
الرَّسُولُ وَأَنَّهُ صَدِيقُهُ مَحَايَيٌ كُلِّ الْطَّعَامِ أَنْظَرَ
كَيْفَ تُبَيِّنُ لَهُمْ الْآيَتِ تُهَوَّنُ ظَرَائِيْلُ يُوقَلُونَ

1. आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी। परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

कर रहे हैं, फिर देखिये कि वह कहाँ
बहके^[1] जा रहे हैं।

76. आप उन से कह दें कि क्या तुम
अल्लाह के सिवा उस की इबादत
(वंदना) कर रहे हो, जो तुम्हें कोई
हानि और लाभ नहीं पहुँचा सकता?
तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने
वाला है।

77. (हे नबी!) कह दो कि हे अहले
किताब! अपने धर्म में अवैध अति न
करो^[2], तथा उन की अभिलाषाओं पर
न चलो, जो तुम से पहले कुपथ हो^[3]
चुके, और बहुतों को कुपथ कर गये,
और संमार्ग से विचलित हो गये।

78. बनी इस्राईल में से जो काफिर हो
गये, वह दावूद तथा मर्यम के पुत्र
ईसा की जुबान पर धिक्कार दिये^[4]
गये, यह इस कारण कि उन्होंने
अवैज्ञा की, तथा (धर्म की सीमा का)
उल्लंघन कर रहे थे।

79. वह एक दूसरे को किसी बुराई से,
जो वे करते, रोकते नहीं थे, निश्चय

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ مَا لَا يَهْنِكُ لَكُمْ ضَرًّا
وَلَا نَنْعَلُّ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ^③

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُبُوا فِي الْأَعْيُنِ
وَلَا تَتَبَيَّعُوا إِلَهُكُمْ قَوْمٌ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلِ
وَأَضْلَلُوكُمْ كَثِيرًا وَأَضْلُلُوكُمْ عَنْ سَوَاءِ الْيَقِينِ^④

لَعْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى
لِسَانِ دَاؤَدَ وَعُيْنَى ابْنِ مَرْيَمَ حَذَلَكَ بِمَا عَصَمُوا
وَكَانُوا يَعْتَدُونَ^⑤

كَانُوا لَا يَتَنَاهُونَ عَنْ مُنْكِرٍ فَعَلُوْهُ لَيْسَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी, परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

2 (अति न करो): अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम को प्रभु अथवा प्रभु का पुत्र न बनाओ।

3 इन से अभिप्राय वह हो सकते हैं, जो नवियों को स्वयं प्रभु अथवा प्रभु का अंश मानते हैं।

4 अर्थात् धर्म पुस्तक जबूर तथा इंजील में इन के धिकृत होने की सूचना दी गयी हैं। (इन्हे कसीर)

वह बड़ी बुराई कर रहे थे।^[1]

80. आप उन में से अधिकृतर को देखेंगे कि काफिरों को अपना मित्र बना रहे हैं। जो कर्म उन्होंने ने अपने लिये आगे भेजा है बहुत बुरा है कि अल्लाह उन पर कृद्ध हो गया तथा यातना में वही सदाचासी होंगे।
81. और यदि वह अल्लाह पर, तथा नबी पर, और जो उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लाते, तो उन को मित्र न बनाते^[2], परन्तु उन में अधिकृतर उल्लंघनकारी हैं।
82. (हे नबी!) आप उन का जो ईमान लाये हैं, सब से कड़ा शत्रुः यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे। और जो ईमान लाये हैं उन के सब से अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। यह बात इस लिये है कि उन में उपासक तथा सन्यासी हैं, और वह अभिमान^[3] नहीं करते।
83. तथा जब वह (ईसाई) उस (कुर्�आन) को सुनते हैं, जो रसूल पर उतरा है, तो आप देखते हैं कि उन की आखें

مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ①

تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَُّونَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَيْنَا
مَا فَدَمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ أَنْ سَخَطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَلِدُونَ ②

وَلَوْكَلُوأُيُّومُونَ يَالنُّوْرِ وَالْيَقِيْنِ وَمَا أُنْزِلَ
إِلَيْهِ مَا أَنْخَدُوهُمْ أَوْلَيَاءُ وَلَكِنْ
كَثِيرًا مِنْهُمْ فِيْقُوْنَ ③

لَتَجَدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا
إِلَيْهِمُودَالَّذِينَ أَشْرَكُوا وَلَتَجَدَنَّ أَقْرَبَهُمْ
مَوْدَدًا لِلَّذِينَ آمَنُواالَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ
نَصْرًا ذَلِكَ بِإِنَّمَّا مِنْهُمْ قَرِيبُوكُمْ
وَرُهْبَانًا وَآئِهُمْ لَا يَسْتَغْرِيُوكُمْ ④

وَإِذَا سِمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَيْ الرَّسُولِ تَرَى
أَعْيُنَهُمْ تَفَيَّضُ مِنَ الدَّمْعِ مِنَّا عَرَفُوكُمْ

1 इस आयत में उन पर धिक्कार का कारण बताया गया है।

2 भावार्थ यह है कि यदि यहूदी, मसा अलैहिस्सलाम को अपना नबी, और तौरात को अल्लाह की किताब मानते हैं, जैसा कि उन का दावा है तो वे मुसलमानों के शत्रु और काफिरों को मित्र नहीं बनाते। कुर्�आन का यह सच आज भी देखा जा सकता है।

3 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि यह आयत हवशा के राजा नजाशी और उस के साधियों के बारे में उतरी, जो कुर्�आन सुन कर रोने लगे, और मुसलमान हो गये। (इब्ने जरीर)

आँसू से उबल रही है, उस सत्य के कारण जिसे उन्होंने पहचान लिया है। वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये, अतः हमें (सत्य) के साक्षियों में लिख^[1] ले।

84. (तथा कहते हैं): क्या कारण है कि हम अल्लाह पर तथा इस सत्य (कुर्�आन) पर ईमान (विश्वास) न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।
85. तो अल्लाह ने उन के यह कहने के कारण उन्हें ऐसे स्वर्ग प्रदान कर दिये, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, वह उन में सदावासी होंगे। तथा यही सत्कर्मियों का प्रतिफल (बदला) है।
86. तथा जो काफिर हो गये, और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी हैं।
87. हे ईमान वलो! उन स्वच्छ पवित्र चीजों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल (वैध) की है, हराम (अवैध)^[2] न करो, और सीमा का उल्लंघन न करो। निसदेह अल्लाह उल्लंघनकारियों^[3]

الْحَقُّ يَقُولُونَ رَبِّنَا أَمْنَا فَإِذَا نَأَمْنَاهُمْ أَمْنًا مَعَ الشَّهِيدِينَ ⑦

وَمَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُنَّ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ لَا يَنْظَمُ
أَنْ يُدْخِلَنَا رَبِّنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ⑧

فَأَنَّابَ اللَّهُ بِمَا قَاتَلُوا جَنَاحِيٌّ مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْفَرُ خَلِيلِنَّ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُجْرِمِينَ ⑨

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ
أَصْحَبُ الْجَنَّةِ ⑩

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ حِمْرٌ مُؤَاطِبُونَ مَا
أَحَلَ اللَّهُ كَلَمْ وَلَا نَعْتَدُ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِلِينَ ⑪

1 जब जाफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हवशा के राजा नजाशी को सूरह मर्यम की आरंभिक आयतें सुनाईं तो वह और उस के पादरी रोने लगे। (सीरत इब्ने हिशाम-1|359)

2 अर्थात् किसी भी खाद्य अथवा वस्तु को वैध अथवा अवैध करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

3 यहाँ से वर्णन क्रम, फिर आदेशों तथा निषेधों की ओर फिर रहा है। अन्य धर्मों के अनुयायियों ने सन्यास को अल्लाह के सामिप्य का साधन समझ लिया

से प्रेम नहीं करता।

88. तथा उस में से खाओ जो हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की है। तथा अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, यदि तुम उसी पर ईमान (विश्वास) रखते हो।
89. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ शपथों^[1] पर नहीं पकड़ता, परन्तु जो शपथ जान बूझ कर ली हो, उस पर पकड़ता है, तो उस का^[2] प्रायश्चित दस निर्धनों को भोजन कराना है, उस माध्यमिक भोजन में से जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो, अथवा उन्हें बस्त्र दो, अथवा एक दास मुक्त करो, और जिसे यह सब उपलब्ध न हो, तो तीन दिन रोज़ा रखना है। यह तुम्हारी शपथों का प्रायश्चित है, जब तुम शपथ लो। तथा अपनी शपथों की रक्षा करो, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है, ताकि तुम उस का उपकार मानो।
90. हे ईमान वालो! निस्सदेह^[3] मदिरा,

وَكُلُّ أَمْرٍ مَّا رَأَيْتُمْ كُلُّهُ حَلَالٌ طَيِّبٌ إِنَّمَا تَنْهَا اللَّهُ
عَنِ الْأَيْمَانِ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِالْغُرْفَةِ إِنْ يَأْتِكُمْ وَلَكُنْ
تُؤَاخِذُ كُلُّ مَنْ عَقَدَ لَهُ الْأَيْمَانَ فَلَكُلَّهُ
إِطْعَامٌ عَشَرَةَ مَسِيقَاتٍ مِّنْ أَوْسَطِ مَا تَعْمَلُونَ
أَهْلِيَّكُمْ أَوْ كُسوَّتَهُمْ أَوْ نَعْرُوْرَقَبَوْهُمْ فَمَنْ لَمْ
يَعْجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَارَةُ أَيمَانِكُمْ
إِذَا حَلَّفْتُمْ وَاحْفَظُوهُ أَيْمَانَكُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمْ إِيمَانُهُ لَعَلَّكُمْ تَشَكَّرُونَ ۝

إِنَّمَا تَنْهَا اللَّهُ عَنِ الْأَيْمَانِ الَّذِينَ أَمْتَوا لَهُمَا الْحُمْرَ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ

था, और ईसाइयों ने सन्यास की रीति बना ली थी और अपने ऊपर संसारिक उचित स्वाद तथा सुख को अवैध कर लिया था। इस लिये यहाँ सावधान किया जा रहा है कि यह कोई अच्छाई नहीं, बल्कि धर्म सीमा का उल्लंघन है।

1 व्यर्थ: अर्थात् बिना निश्चय के। जैसे कोई बात बात पर बोलता है: (नहीं, अल्लाह की शपथ!) अथवा: (हाँ, अल्लाह की शपथ!) (बुखारी- 4613)

2 अर्थात् यदि शपथ तोड़ दे, तो यह प्रायश्चित है।

3 शराब के निषेध के विषय में पहले सूरह बकरा आयत 219, और सूरह निसा आयत 43 में दो आदेश आ चुके हैं। और यह अन्तिम आदेश है, जिस में शराब

जुआ तथा देवस्थान^[1] और पाँसे^[2]
शैतानी मलिन कर्म हैं, अतः इन से
दूर रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

91. शैतान तो यही चाहता है कि शराब
(मदिरा) तथा जूए द्वारा तुम्हारे बीच
बैर तथा द्वेष डाल दे, और तुम्हें
अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक
दे, तो क्या तुम रुकोगे या नहीं?

92. तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और
उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो,
तथा (उन की अवैज्ञा से) सावधान
रहो और यदि तुम विमुख हुये, तो
जान लो कि हमारे रसूल पर केवल
खुला उपदेश पहुँचा देना है।

93. उन पर जो ईमान लाये तथा सदाचार
करते रहे, उस में कोई दोष नहीं,
जो (निषेधाज्ञा से पहले) खा लिया,
जब वह अल्लाह से डरते रहे, तथा
ईमान पर स्थिर रह गये, और सत्कर्म
करते रहे, फिर डरते और सत्कर्म
करते रहे, फिर (रोके गये तो) अल्लाह
से डरे और सदाचार करते रहे, तो
अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता^[3] है।

को सदैव के लिये वर्जित कर दिया गया है।

1. देव स्थान: अर्थात् वह वेदियाँ जिन पर देवी देवताओं के नाम पर पशुओं की
बलि दी जाती हैं। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य के
नाम से बलि दिया हुआ पशु अथवा प्रसाद अवैध है।

2. पाँसे: यह तीन तीर होते थे, जिन से वह कोई काम करने के समय यह निर्णय
लेते थे कि उसे करें या न करें। उन में एक पर "करो", और दूसरे पर "मत
करो" और तीसरे पर "शून्य" लिखा होता था। जूँबे में लाटी और रेश इत्यादि
भी शामिल हैं।

3. आयत का भावार्थ यह है कि जिन्होंने वर्जित चीजों का निषेधाज्ञा से पहले प्रयोग

وَالْأَذْكُرْ رِجْسٌ مِّنْ عَيْنِ الشَّيْطَنِ فَلَا جُنَاحَ لِنُوَلَّهُ
لَعْلَمُ نَعْلَمُونَ^①

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَنُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَعْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالشَّيْرِ وَيَصِدُّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ
وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهُلْ أَنْتُمْ شَهِدُونَ^②

وَاجْلِيْعُ اللَّهُ وَاجْلِيْعُ الرَّسُولَ وَاجْلِيْعُوا فِيْنَ تَوَكِيْلُهُمْ
فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَمُ الْبَيْنُ^③

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَاتِ جُنَاحٌ
فِيمَا طَعَمُوا إِذَا مَا تَقَرَّأُوا مَنْتَوْا عَلَى الصَّلِحَاتِ ثُمَّ أَنْقَوْا
وَامْتَوْأُوا ثُمَّ أَنْقَوْا أَحَسَّوْا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ^④

94. हे ईमान वालो! अल्लाह कुछ शिकार द्वारा जिन तक तुम्हारे हाथ तथा भाले पहुँचेंगे, अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेगा, ताकि यह जान ले कि तुम में से कौन उस से बिन देखे डरता है? फिर इस (आदेश) के पश्चात् जिस ने (इस का) उल्लंघन किया, तो उसी के लिये दुखदायी यातना है।

95. हे ईमान वालो! शिकार न करो^[1], जब तुम एहराम की स्थिति में रहो, तथा तुम में से जो कोई जान बूझ कर ऐसा कर जाये, तो पालतू पशु से शिकार किये पशु जैसा बदला (प्रतिकार) है, जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायकारी व्यक्ति करेंगे, जो काबा तक हृद्य (उपहार स्वरूप) भेजा जाये। अथवा^[2] प्रायश्चित्त है, जो कुछ निर्धनों का खाना है, अथवा उस के बराबर रोज़े रखना है। ताकि अपने किये का दुष्परिणाम चखें। इस आदेश से पूर्व जो हुआ, अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया, और जो फिर करेगा, अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह

لِيَهُمَا الَّذِينَ آمَنُوا وَبَلَوْلَكُمُ اللَّهُ أَعْلَمُ مِنْ الصَّيْدِ
تَنَالَكُمْ أَيْمَانُهُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَحْمَلُهُ
بِالْغَيْبِ فَمَنْ أَعْنَدَ لِيَكُلُّكُمْ عَذَابٌ
لِلْيَوْمِ

لِيَهُمَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا هُنَّ حُرْمَةٌ
قَاتَلُهُمْ مِنْكُمْ مُتَنَعِّذُ أَفْجَرَ أَمْثَلُ مَا قَاتَلَ مِنَ النَّعْوَرِ
يَخْلُمُهُمْ ذَوَاعْدِيلٍ مِنْكُمْ هَدِيَّ الْلَّيْلَكَ الْعَبَّةُ أَوْ
كَعَارَةً طَعَامَ مَسِيْكِينٍ أَوْ عَدْلٍ ذَلِكَ صِيَامًا
لِيَدُوقَ وَبَالْ أَمْرَةٍ عَفَاهُ اللَّهُ عَلَىٰ سَلَفَ وَمَنْ عَادَ
فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ وَأَنِتَقَاهُ

किया, फिर जब भी उन को अवैध किया गया तो उन से रुक गये, उन पर कोई दोष नहीं। सहीह हदीस में है कि जब शराब वर्जित की गयी तो कुछ लोगों ने कहा कि कुछ लोग इस स्थिति में मारे गये कि वह शराब पिये हुये थे, उसी पर यह आयत उतरी। (बुखारी-4620)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो भी नशा लाये वह मदिरा और अवैध है। (सहीह बुखारी-2003)। और इस्लाम में उस का दण्ड अस्सी कोड़े हैं। (बुखारी- 6779)

1 इस से अभिप्राय थल का शिकार है।

2 अर्थात् यदि शिकार के पशु के समान पालतू पशु न हो, तो उस का मूल्य हरम के निर्धनों को खाने के लिये भेजा जाये अथवा उस के मूल्य से जितने निर्धनों को खिलाया जा सकता हो उतने ब्रत रखो।

प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

96. तथा तुम्हारे लिये जल का शिकार और उस का खाद्य^[1] हलाल (वैध) कर दिया गया है, तुम्हारे तथा यात्रियों के लाभ के लिये, तथा तुम पर थल का शिकार जब तक एहराम की स्थिति में रहो, हराम (अवैध) कर दिया गया है, और अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, जिस की ओर तुम सभी एकत्र किये जाओगे।

97. अल्लाह ने आदरणीय घर काबा को लोगों के लिये (शान्ति तथा एकता की) स्थापना का साधन बना दिया है, तथा आदरणीय मासों^[2] और (हज्ज) की कुर्बानी तथा कुर्बानी के पशुओं को जिन्हें पढ़े पहनाये गये हों, यह इस लिये किया गया ताकि तुम्हें ज्ञान हो जाये कि अल्लाह जो कुछ आकाशों और जो कुछ धरती में हैं सब को जानता है। तथा निस्संदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का ज्ञानी है।

98. तुम जान लो कि अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है, और यह कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

99. अल्लाह के रसूल का दायित्व इस के सिवा कुछ नहीं कि उपदेश पहुँचा दे। और अल्लाह जो तुम बोलते और जो

أَجْلَى لِحُصِيدُ الْبَعْرُوقَ طَعَامُهُ مَتَاعًا لَّهُ
وَلِسَيَارَةٍ وَجُرْمٌ عَلَيْنَمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَادِمُ حُرْمًا
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي رَأَيْتُمُو تُخْسِرُونَ^④

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ أَبْيَاتَ الْحُرَمَةِ قِيمًا لِلْمَيَاسِ
وَالشَّهْرُ الْحُرَمَةُ وَالْهَدْيَةُ وَالْقَلَائِيدُ ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ^⑤

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ^٦

مَا لَعَلَى الرَّسُولِ إِلَّا أَبْلَغَ وَاللَّهُ يَعْلَمُ بِمَا يَبْدِلُونَ
وَمَا تَكْثُرُونَ^٧

1 अर्थात् जो बिना शिकार किये हाथ आये, जैसे मरी हुई मछली। अर्थात् जल का शिकार एहराम की स्थिति में तथा साधारण अवस्था में उचित है।

2 आदरणीय मासों से अभिप्रेतः जुलकादा जुलहिज्जा तथा मुहर्रम और रजब के महीने हैं।

मन में रखते हो, सब जानता है।

100. (हे नबी!) कह दो कि मलिन तथा पवित्र समान नहीं हो सकते। यद्यपि मलिन की अधिकता तुम्हें भा रही हो। तो हे मतिमानो! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरो, ताकि तुम सफल हो जाओ।^[1]

101. हे ईमान वालो! ऐसी बहुत सी चीजों के विषय में प्रश्न न करो, जो यदि तुम्हें बता दी जायें, तो तुम्हें बुरा लग जायें। तथा यदि तुम उन के विषय में जब कि क़ुओन उतर रहा है, प्रश्न करोगे, तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जायेगी, अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील^[2] है।

102. ऐसे ही प्रश्न एक समुदाय ने तुम से पहले^[3] किये, फिर इस के कारण वह काफिर हो गये।

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيرُ وَالظَّاهِرُ وَمَنْ أَعْجَبَكَ
كُثْرَةً الْجَنِينُ فَأَنْقُضُوا اللَّهَ يَأْوِلُ الْأَبْلَابَ
لَعَلَّمُ تَغْرِيُونَ^{۶۱}

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا سُئِلُوا عَنْ أَشْيَاءٍ رَّأُوا
بِئْدَ لَكُمْ سُؤُلُكُمْ وَإِنْ سُئِلُوا عَنْهَا جَاءُوكُمْ
الْقُرْآنُ بِئْدَ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا وَاللَّهُ خَفُورٌ
حَلِيلٌ^{۶۲}

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ لَمْ يَأْصِبُهُوا
بِهَا كُفَّارٌ^{۶۳}

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जिसे रोक दिया है, वही मलिन और जिस की अनुमति दी है, वही पवित्र है। अतः मलिन में स्त्री न रखो, और किसी चीज़ की कमी और अधिकता को न देखो, उस के लाभ और हानि को देखो।

2 इन्हे अब्बास (रजियल्लाहु अन्ह) कहते हैं कि कुछ लोग नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उपहास के लिये प्रश्न किया करते थे। कोई प्रश्न करता कि मेरा पिता कौन है? किसी की ऊँटनी खो गयी हो तो आप से प्रश्न करता कि मेरी ऊँटनी कहाँ है? इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी-4622)

3 अर्थात् अपने रसूलों से। आयत का भावार्थ यह है कि धर्म के विषय में कुरेद न करो। जो करना है, अल्लाह ने बता दिया है, और जो नहीं बताया है, उसे क्षमा कर दिया है, अतः अपने मन से प्रश्न न करो, अन्यथा धर्म में सुविधा की जगह असुविधा पैदा होगी, और प्रतिबंध अधिक हो जायेंगे, तो फिर तुम उन का पालन न कर सकोगे।

103. اہلہ کنیت نے بھیرا اور ساہبہ تथا
بسیلہ اور ہام کुछ نہیں بنایا^[1]
ہے، پرانے جو کافیر ہو گئے، وہ
اہلہ کنیت پر جوڑ گدھ رہے ہیں، اور
उن مें اधिकृतर نیربندی ہیں।
104. اور جब اس سے کہا جاتا ہے
کہ اس کی اور آओ جو اہلہ کنیت
نے عطا کی ہے، تथا رسول کی اور
(آओ) تو کہتے ہیں: ہم کو وہی
بس ہے، جس پر ہم نے اپنے
پور्वजोں کو پایا ہے، کہاں اس کے
پور्वج کुछ نہ جانتے رہے ہوں اور ن
سُمناگ پر رہے ہوں؟
105. ہے ایمان والو! تum اپنی چینت
کرو، tu مھونے کے ہانی نہیں پہنچا
سکوں گے جو کوپथ ہو گئے، جب tu م
سُمناگ پر رہو! اہلہ کنیت کی اور tu م
سab کو (پرلوک مें) فیر کر

۱۰۳. مَاجِعَلَ اللَّهُ مِنْ بَيْرَةً وَ لَا سَلَمَةً وَ لَا
وَصِيلَةً وَ لَا حَامِلَةً وَ لَكُنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَقْرُونَ عَلَى
اللَّهِ الْكَذَبَ وَ أَنْزَلُهُمْ لَا يَعْقُلُونَ ۝

۱۰۴. وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَالْ
رَّسُولُ قَالُوا حَسِبْنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْوَا بَلْ أَنَّا
كَانَ أَبْأَأْ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْءًا وَ لَا يَهْتَدُونَ ۝

۱۰۵. يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أَمْنَوْا عَلَيْهِمْ أَنْفَسَكُلَّا لَا يَضْرُبُهُمْ
صَلْ إِذَا اهْتَدَيْكُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ حَمِيعًا فَيَسْأَمُ
بِمَا نَذَرْتُمُو تَعْبَلُونَ ۝

1 ارब کے میشانیوالی دیوی دیویت کے نام پر کुछ پشتوں کو چوڈ دتے ہے، اور
उنہے پवیٹ سمجھتے ہے، یہاں ہنہی کی چرچا کی گئی ہے।
بھیرا- وہ جو ٹننی جس کو، اس کا کان چیر کر دیویت اؤں کے لیے مुکت
کر دیا جاتا ہے، اور اس کا دوڈ کوئی نہیں دوہ سکتا ہے۔
ساہبہ- وہ پش جسے دیویت اؤں کے نام پر مुکت کر دتے ہے، جس پر ن کوئی
بوجھ لاد سکتا ہے، ن سوار ہو سکتا ہے۔
بسیلہ- وہ جو ٹننی جس کا پہلا تھا دوسرا بچھا مادا ہو، اسی ٹننی
کو بھی دیویت اؤں کے نام پر مुکت کر دتے ہے۔
ہام- نر جس کے بیوی سے دس بچے ہو جائے، ہنہے بھی دیویت اؤں کے نام پر
ساؤنڈ بننا کر مुکت کر دیا جاتا ہے۔
भاواہد یہ ہے کہ: یہ انگلی چیزوں ہے۔ اہلہ کنیت نے اس کا آدیش نہیں دیا ہے
نبی (ساللہ علیہ وآلہ وسلم) نے کہا: میں نے نرک کو دیکھا کہ اس کی
جھالا اک دوسرے کو ٹوڈ رہی ہے۔ اور امر بین لعہی کو دیکھا کہ وہ اپنی
اٹنے خیچ رہا ہے۔ اسی نے سب سے پہلے ساہبہ بنایا ہے۔ (بُوخَارِی- 4624)

जाना है, फिर वह तुम्हें तुम्हारे^[1]
कर्मों से सूचित कर देगा।

106. हे इमान वालो! यदि किसी के मरण का समय हो, तो वसिष्यत^[2] के समय तुम में से दो न्यायकारियों को अथवा तुम्हारे सिवा दो दूसरों को गवाह बनाये, यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो, और तुम्हें मरण की आपदा आ पहुँचे। और उन दोनों को नमाज के बाद रोक लो, फिर वह दोनों अल्लाह की शपथ लें, यदि तुम्हें उन पर संदेह हो। वह यह कहें कि हम गवाही के द्वारा कोई मूल्य नहीं खरीदते, यद्यपि वह समीपवर्ती क्यों न हों, और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं, यदि हम ऐसा करें तो पापियों में हैं।

107. फिर यदि ज्ञान हो जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के अधिकारी हुये हैं, तो उन दोनों के स्थान पर दो दूसरे गवाह खड़े हो जायें, उन में से जिन का अधिकार पहले दोनों ने दबाया है, और वह दोनों शपथ लें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सहीह है, और हम ने कोई अत्याचार नहीं किया है। यदि किया है, तो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَصَرْتُمْ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ جِئْنَ الْوَصِيَّةَ أَثْنَانِ ذَوَاعْدُلٍ مِّنْكُمْ أَوْ أَخْرَنِ مِنْ عَيْرِ كُحْرُونَ أَنْتُمْ صَرِيبُونَ فِي الْأَرْضِ قَاتَلْتُكُمْ مُّؤْمِنَةُ الْمَوْتِ تَعْسُو نَهَمَا مِنْ بَعْدِ الْقُلُوْبَةِ فَيُقْسِمُنَ بِاللَّهِ إِنْ ارْتَبَمُوا لَا تُشَرِّبُنَ يَهُ شَمَنَا وَلَوْكَانَ ذَاقُرُونَ وَلَا نَكْسُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا لَا نُؤْمِنُ الْأَثْيَمِينَ ④

فَإِنْ عَثَرَ عَلَىٰ أَيْمَانِهَا سَحْقًا فَأَخْرِنَ يَقُولُ مِنْ مَعَامِهِمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحْقَ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيْنَ فَيُقْسِمُنَ بِالشَّوْلَشَهَادَتِنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَنَا إِنَّا لَا نُؤْمِنُ الطَّلَبِيْمِينَ ⑤

1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि लोग कुपथ हो जायें, तो उन का कुपथ होना तुम्हारे लिये तर्क (दलील) नहीं हो सकता कि जब सभी कुपथ हो रहे हैं तो हम अकेले क्या करें? प्रत्येक व्यक्ति पर स्वयं अपना दायित्व है, दूसरों का दायित्व उस पर नहीं, अतः पूरा संसार कुपथ हो जाये तब भी तुम सत्य पर स्थित रहो।

2 वसिष्यत का अर्थ है: उत्तरदान, मरणासन्धि आदेश।

(نیسے دہ) ہم اत्याचारी ہیں।

108. اس پ्रکار اधिक آشنا ہے کہ وہ سہی گواہی دے گے، اथوا اس بات سے ڈرے گے کہ ان کی شاپ�وں کو دوسری شاپھوں کے پशچاٹ ن مانا جائے، تथا اہلہ حسے ڈرتے رہو، اور (उس کا آدھہ) سُونو، اور اہلہ حسے علّمابن کاریوں کی سیधی راہ نہیں^[۱] دیکھاتا।
109. جس دن اہلہ حسے سب رسلوں کو اکٹھ کرے گا، فیر ان سے کہے گا کہ تمھے (تمھاری جاتیوں کی اور سے) کیا عتّر دیا گयا؟ وہ کہے گا کہ تمھے اس کا کوئی جان^[۲] نہیں۔ نیسے دہ تو ہی سب چھپے تھوڑے کا جانی ہے!
110. تھا یاد کرو، جب اہلہ حسے نے کہا: ہے میریم کے پुतرِ ایسا! اپنے کوپر تھا اپنی ماتا پر میرے پورستکار کو یاد کر، جب میں نے پاریتھما (جیبریل) ڈالا تو جسے سامर्थن دیا، تو گھوڑا (گوڈ) میں تھا بडی آیا میں لوگوں سے باتے کر رہا ہا، تھا تو جسے پوستک اور پربوධ تھا تیرات

ذلک آدنَ أَنْ يَأْتُوا بِ الشَّهَادَةِ عَلَى وَجْهِهَا
أَوْ يَعْقُلُوا أَنْ سُرُّكَمَانَ بَعْدَ إِعْلَامِهِمْ وَأَنَّهُ اللَّهُ
وَأَسْمَعُوا وَاللَّهُ لَأَيْمَدِي الْقَوْمُ الْفَسِيقُونَ

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أَجْبَحْتُمْ قَالُوا
لَا عَلِمْ لَنَا إِنَّكَ أَنْتَ عَلَمُ الْغَيْبِ^⑤

إِذْ قَالَ اللَّهُ يُعْصِي أَبْنَى هُرِيمَ إِذْ كُنْتُ نَعْمَقَ عَلَيْكَ
وَعَلَى وَالدَّرِيكَ إِذْ أَيْدَنْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ
تُكْلِمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَلَّا لَكَ ذِلْكَ الْكِبَرِ
وَالْحِكْمَةُ وَالْمُؤْرِثَةُ وَالْأَجْمِيلُ وَإِذْ خَلَقَ مِنَ
الْطَّيْلِينَ كَهْيَةَ الطَّلَبِ إِذْ فَنَّفَخَ فِيهَا فَتَكُونُ
طَيْرًا إِذْنِي وَثُبُرِي الْأَكْمَهُ وَالْأَبْرَصُ إِذْنِي

1 آیات 106 سے 108 تک میں وسیعیت تھا اس کے ساکھی کا نیتمان بتایا جا رہا ہے کہ دو ویشیست ویکیتوں کو ساکھی بنایا جائے، اور یदی مسلمان ن میلے تو گیر مسیح بھی ساکھی ہو سکتے ہیں۔ ساکھیوں کو شاپھ کے ساتھ ساکھی دینا چاہیے۔ ویکھ کی دشائی میں دونوں پکھ اپنے اپنے ساکھی لائیں۔ جو انکار کرے اس پر شاپھ ہے۔

2 امریکا ہم نہیں جانتے کہ ان کے مان میں کیا ہا، اور ہمارے باہم ان کا کرم کیا رہا?

और इंजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्ठी से पक्षी का रूप बनाता, और उस में फूँकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था। और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था, और जब तू मुर्दा को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था, और मैं ने बनी इस्लाईल से तुझे बचाया था, जब तू उन के पास खुली निशानियाँ लाया, तो उन में से काफिरों ने कहा कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं है।

111. तथा याद कर, जब मैं ने तेरे हवारियों के दिलों में यह बात डाल दी कि मुझ पर तथा मेरे रसूल (ईसा) पर ईमान लाओ, तो सब ने कहा कि हम ईमान लाये, और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।
112. जब हवारियों ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तेरा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आकाश से थाल (दस्तर ख्वान) उतार दो। उस (ईसा) ने कहा: तुम अल्लाह से डरो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।
113. उन्हों ने कहा: हम चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को संतोष हो जाये, तथा हमें विश्वास हो जाये कि तू ने हमें जो कुछ बताया है सच्च है, और हम उस के साक्षियों में से हो जायें।

وَإِذْ خَرَجَ الْمُوْقَرُ يَأْذِنِي وَإِذْ كَفَّتُ بَنِي إِسْرَاءَلَ يُبَلِّغُنِي أَذْجَنَهُمْ بِالْمُبَيِّنَاتِ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ أَنَّ هَذَا لَا يَسْخَرُ مُؤْمِنِينَ ①

وَإِذَا وُحِيَتْ إِلَى الْحَوَارِيْنَ أَنْ امْنَوْا بِي وَبِرَسُورِيْ ۝ قَالُوا أَمْكَنَا وَاسْهَدْنَا مُسْلِمُوْنَ ②

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيْوُنَ يَعْبُسَى ابْنَ مَرْيَوْهَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبِّكَ أَنْ يُثْرِلَ عَلَيْنَا مَإِدَةً مِنَ السَّمَاءِ ۝ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِيْنَ ③

قَالُوا إِنْ رُبِّنَا أَنْ تَأْكُلَ مِنْهَا وَنَطْمَئِنَ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْنَا وَنَلَوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّهِيْرِيْنَ ④

114. मर्यम के पुत्र ईसा ने प्रार्थना की: हे अल्लाह हमारे पालनहार! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे, जो हमारे तथा हमारे पश्चात् के लोगों के लिये उत्सव (का दिन) बन जाये, तथा तेरी ओर से एक चिन्ह (निशानी)। तथा हमें जीविका प्रदान कर, तू उत्तम जीविका प्रदाता है।
115. अल्लाह ने कहा मैं तुम पर उसे उतारने वाला हूँ, फिर उस के पश्चात् भी जो कुफ्र (अविश्वास) करेगा, तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा, ऐसा दण्ड^[1] कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूँगा।
116. तथा जब अल्लाह (प्रलय के दिन) कहेगा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य (अराध्य) बना लो? वह कहेगा: तू पवित्र है, मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैं ने कहा होगा, तो तुझे अवश्य उस का ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है, और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में त ही परोक्ष (गैब) का अति ज्ञानी है।
117. मैं ने तो उन से केवल वही कहा था, जिस का तू ने आदेश दिया था

قَالَ عَيْنَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزَلْتُ عَلَيْنَا مَلِيْدَهُ
مِنَ السَّمَاءِ لَا تَكُونُ لَنَا عِيْدًا لِأَوْلَانَا وَآخِرَنَا وَآتَيْهُ
مِنْكَ وَارْزُقْنَا وَآتَنْتَ خَيْرًا لِرَزِيقْنِ^①

قَالَ اللَّهُ أَنِّي مُنْزِلٌ لَهَا عِلْمَنِّيْمَ فَمَنْ يَكْفُرُ بِعَدْ مِنْكَ
فَإِنِّي أَعِدُّ لِهِ عَذَابًا لَا أَعِدُّ لِهِ أَحَدًا مِنْ
الْعَلَمَيْنِ^②

وَلَذْ قَالَ اللَّهُ يَعِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَأَنْتَ كُلُّكَ لِلَّهِ أَكْلِسِ
أَنْجِدُونِي وَأَنِّي الْمَهْمَنِ وَمَنْ دُونَ اللَّهِ قَالَ سُجْنِكَ مَا
يَكُونُ لِكَ أَقْوَلَ مَالِيْسَ لِيْسَ كَمَنْ كُلُّكَ لِلَّهِ
فَقَدْ عَلِمْتَنِي أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي
نَفْسِكَ رَأَيْكَ أَنْتَ عَلَمَ الْغَيْوَبِ^③

مَأْفَلْتُ لَمْ إِلَّا مَا أَمْرَيْتُنِي بِهِ أَنْ أَعْبُدُ وَاللَّهُ رَبِّي

1 अधिकृत भाष्यकारों ने लिखा है, कि वह थाल आकाश से उतरा। (इब्ने कसीर)

कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया^[1], तो तू ही उन को जानता था। और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है।

118. यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वह तेरे दास (बन्दे) है, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है।

119. अल्लाह कहेगा: यह वह दिन है, जिस में सच्चों को उन का सच्च ही लाभ देगा। उन्हीं के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उन में नित्य सदावासी होंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये और यही सब से बड़ी सफलता है।

120. आकाशों तथा धरती और उन में जो कुछ है, सब का राज्य अल्लाह ही का^[2] है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

وَرَبِّكُمْ وَلَدُتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدٌ أَنَّا دَمْتُ فِيهِمْ قَلْمَانًا
تَوْفِيقَنِي كُنْتَ أَنْتَ الْكَوَافِرُ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ^①

إِنْ تُعْلِمُ بِهِمْ فَإِنَّهُمْ عَبَادُكَ وَلَمْ يَغْرِبْ لَهُمْ قَلْمَانٌ
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ^②

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمٌ يَنْفَعُ الصَّابِرِينَ صَدَقُوا مِمَّا
جَاءُتُ بِهِنَّ مِنْ نَعْيَةِ الْأَنْهَارِ خَلِيلُنِي ذِيَّهَا أَبْدَارِ رَفِيْ
اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضِيَّ عَنْهُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ^③

إِلَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ لَّهُمْ بِرٌّ^④

1 और मुझे आकाश पर उठा लिया, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, जब प्रलय के दिन कुछ लोग बायें से धर लिये जायेंगे तो मैं भी यही कहूँगा। (बुखारी- 4626)

2 आयत 116 से अब तक की आयतों का सारांश यह है कि अल्लाह ने पहले अपने वह पुरस्कार याद दिलाये जो ईसा अलैहिस्सलाम पर किये। फिर कहा कि सत्य की शिक्षाओं के होते तेरे अनुयायियों ने क्यों तुझे तथा तेरी माता को पूज्य बना लिया? इस पर ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे कि मैं इस से निर्दोष हूँ। अभिप्राय यह है कि सभी नवियों ने एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म की शिक्षा दी। परन्तु उन के अनुयायियों ने उन्हीं को पूज्य बना लिया। इसलिये इस का भार अनुयायियों और वे जिस की पूजा कर रहे हैं उन पर है। वह स्वयं इस से निर्दोष हैं।